बीसीसीएल
BCCL
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
Bharat Coking Coal Limited

अंक - 42, अर्ध वार्षिक
फरवरी, 2025

कोयला भारती

बीसीसीएल की गृह पत्रिका

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

(एक मिनीरत्न कंपनी)

(कोल इण्डिया लिमिटेड की एक अनुषंगी कंपनी)

कोयला भवन, कोयला नगर, धनबाद- 826005

विशिष्ट गतिविधियाँ

कोल इंडिया लिमिटेड के 50वें स्थापना दिवस के अवसर पर कोलकाता में आयोजित एक विशेष समारोह में वर्ष 2023-24 के दौरान विभिन्न मानकों पर बेहतर प्रदर्शन करने वाली भारत कोकिंग कोल लिमिटेड को कॉरपोरेट स्तर पर दो पुरस्कार तथा व्यक्तिगत श्रेणी में कुल पाँच पुरस्कार प्रदान किए गए। यह पुरस्कार माननीय केन्द्रीय कोयला एवं खान मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी द्वारा प्रदान किए गए।

माननीय केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी द्वारा दिनांक 09 जनवरी, 2025 को रांची में आयोजित समारोह में बीसीसीएल में अनुकंपा के आधार पर नियोजन पाने वाले पांच लाभार्थियों को नियोजन पत्र सौंपा गया।

कार्बन उत्सर्जन को कम करने तथा स्थायी ऊर्जा की दिशा में आगे बढ़ने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए श्री सतीश चंद्र दुबे, माननीय कोयला एवं खान राज्य मंत्री ने विशेष अभियान 4.0 के तहत सीएमपीडीआई रांची से भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (बीसीसीएल) के 51 सौर ऊर्जा संयंत्रों का रिमोट से उद्घाटन किया।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में 76वाँ गणतंत्र दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर जियलगोरा स्टेडियम, लोदना, धनबाद में आयोजित मुख्य समारोह में कंपनी के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री समीरन दत्ता ने राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराकर समारोह की शुरुआत की और परेड की सलामी ली।

स्वागतम

श्री मनोज कुमार अग्रवाल ने कंपनी में निदेशक (तकनीकी) / योजना व परियोजना के पद पर दिनांक 27 जनवरी, 2025 को कार्यभार ग्रहण किया। पदभार ग्रहण करने से पहले श्री अग्रवाल नॉर्दर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, सिंगरौली, छत्तीसगढ़ में महाप्रबंधक (खनन) के पद पर कार्यरत थे। इससे पहले आप एसईसीएल, सीसीएल और एनसीएल में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं। कोयला खनन के क्षेत्र में गहन अध्ययन के लिए आपने फ्रांस और स्लोवेनिया देशों का दौरा किया है। श्री अग्रवाल ने वर्ष 1990 में आइआइटी-आइएसएम से माइनिंग इंजीनियरिंग और वर्ष 2023 में इंडियन स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, रांची से एमबीए की उपाधि प्राप्त की है। श्री अग्रवाल ने अपने करियर की शुरुआत वर्ष 1990 साउथ इस्टर्न कोलफील्ड्स में जूनियर एक्जीक्यूटिव ट्रेनी के पद से की थी। आपने साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (एसइसीएल), सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड (सीसीएल) और नॉर्दर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (एनसीएल) की अंडरग्राउंड और ओपन कास्ट खदानों में खान प्रबंधक से लेकर क्षेत्रीय महाप्रबंधक तक विभिन्न क्षमताओं में कोयला उत्पादन गतिविधियों में काम किया। आपको वर्ष 2020 में डॉ. अंबेडकर एक्सीलेंसी सर्विस नेशनल अवॉर्ड, वर्ष 2021 में वीर बिरसा मुंडा राष्ट्रीय पुरस्कार, वर्ष 2021 में ही महात्मा ज्योतिबा फुले नेशनल अवॉर्ड और वर्ष 2022 में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम नेशनल अवॉर्ड प्राप्त हुआ। श्री अग्रवाल के विशाल अनुभव एवं ज्ञान का लाभ पूरे कोयला उद्योग को प्राप्त होने की उम्मीद है। बीसीसीएल परिवार आपका हार्दिक स्वागत और अभिनंदन करते हुए आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

समीरन दत्ता
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक
Samiran Dutta
Chairman-cum-Managing Director

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
एक मिनी रत्न कम्पनी
(कोल इण्डिया लिमिटेड की एक अनुषंगी कंपनी)
BHARAT COKING COAL LIMITED
A Mini Ratna Company
(A Subsidiary of Coal India Limited)
कोयला भवन, कोयला नगर / Koyla Bhawan, Koyla Nagar,
धनबाद /Dhandbad-826005

अध्यक्ष की कलम से

प्रिय साथियो,

कोयला भारती के 42वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। यह विशेष रूप से हर्ष का विषय है कि इस अंक का प्रकाशन अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के शुभ अवसर पर किया जा रहा है। यह दिवस हमें अपनी भाषाई विरासत के प्रति सजग रहने और उसके संरक्षण का संकल्प लेने का अवसर प्रदान करता है।

'कोयला भारती' हमारी कंपनी की गृह पत्रिका होने के साथ-साथ राजभाषा के प्रचार-प्रसार का एक सशक्त माध्यम भी है। यह पत्रिका न केवल हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करती है, बल्कि हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा भी देती है। मुझे खुशी है कि इस पत्रिका में आप सभी बढ़-चढ़कर योगदान करते हैं।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि यह हमें अपनी जड़ों से जुड़े रहने का संदेश देता है। भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक पहचान की भी प्रतीक है। हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ-साथ हमारी सांस्कृतिक विरासत का भी अभिन्न अंग है।

मैं गर्व के साथ कह सकता हूँ कि हमारी कंपनी में दैनिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी हमने हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया है। हमारी वेबसाइट द्विभाषी है और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भी हिंदी का ही प्रयोग मुख्य रूप से किया जाता है।

राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्टता के लिए हमें कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। यह आप सभी के प्रयासों का ही परिणाम है। लेकिन हमें यहीं नहीं रुकना है। हमें राजभाषा के प्रयोग को और अधिक बढ़ाना है, इसे और अधिक सहज और स्वाभाविक बनाना है।

मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि आप अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। नए कर्मचारियों को प्रेरित करें, उनका मार्गदर्शन करें। हिंदी कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग लें। कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए उपलब्ध सॉफ्टवेयर और टूल्स का उपयोग करें।

'कोयला भारती' के माध्यम से आप अपनी रचनात्मक प्रतिभा को निरंतर निखारते रहें। अपनी लेखनी से न केवल पत्रिका को समृद्ध करें, बल्कि अन्य साथियों को भी प्रेरित करें। यह पत्रिका हमारी सामूहिक यात्रा का प्रतीक है, जिसमें हम सब मिलकर राजभाषा के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन कर रहे हैं।

अंत में, मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि यह अंक भी पिछले अंकों की तरह ज्ञानवर्धक और रोचक होगा। आइए, इस अवसर पर हम सब मिलकर राजभाषा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराएं और इसके व्यापक प्रयोग के लिए निरंतर प्रयासरत रहें।

शुभकामनाओं सहित,

(समीरन दत्ता)
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

मुरली कृष्ण रमैय्या
निदेशक (कार्मिक)
Murli Krishna Ramaiah
Director (P)

बीसीसीएल
BCCL
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
Bharat Coking Coal Limited

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
एक मिनी रत्न कम्पनी
(कोल इण्डिया लिमिटेड की एक अनुषंगी कंपनी)
BHARAT COKING COAL LIMITED
A Mini Ratna Company
(A Subsidiary of Coal India Limited)
कोयला भवन, कोयला नगर / Koyla Bhawan, Koyla Nagar,
धनबाद /Dhanbad-826005

अपनी बात

प्रिय साथियो,

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के पावन अवसर पर प्रकाशित 'कोयला भारती' के 42वें अंक के माध्यम से मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। यह दिवस विश्व की सभी भाषाओं के संरक्षण और विकास का संदेश देता है। यह स्मरण कराता है कि प्रत्येक भाषा अनमोल है और उसका अपना सांस्कृतिक महत्व है। विभिन्न भाषाएं एक-दूसरे को समृद्ध करती हैं और वैश्विक संस्कृति को समृद्ध बनाती हैं।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति निरंतर प्रगतिशील रही है। यह आप सभी के सामूहिक प्रयासों और समर्पण का परिणाम है कि आज हमारी कंपनी में राजभाषा हिंदी में कार्य करने का एक बहुत अच्छा सकारात्मक माहौल बन गया है। मुझे गर्व है कि हमारे अधिकारी और कर्मचारी राजभाषा को अपनाने में सदैव अग्रणी रहे हैं।

वर्ष 2024-25 हमारे लिए विशेष उपलब्धियों का वर्ष रहा है। इस वर्ष हमने कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया। विगत अगस्त माह में राष्ट्रीय कवि सम्मेलन, सितंबर माह में राजभाषा पखवाड़ा, अक्टूबर माह में केंद्रीय अनुवाद ब्युरो के माध्यम से अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम, नवंबर माह में नराकास की छमाही बैठक का आयोजन महत्वपूर्ण रहा।

10 जनवरी, 2025 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में हमने हिंदी की वैश्विक यात्रा पर विचार-विमर्श किया। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि विश्व के कई देशों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है और वैश्विक मंच पर हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ रही है। जनवरी माह के अंतिम सप्ताह में राजभाषा सम्मेलन, हिंदी पुस्तक मेला और राजभाषा प्रदर्शनी आदि कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित की गयी, जो निश्चित रूप से अन्य संस्थानों के लिए भी प्रेरणास्रोत बनेगी।

हमारी कंपनी में दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग में निरंतर वृद्धि हो रही है। कंपनी में राजभाषा हिंदी के प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। हम नियमित रूप से हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन करते हैं, जिनमें कर्मचारियों को कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि आप राजभाषा के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझें और इसके प्रयोग को और अधिक बढ़ाएं। याद रखें कि हमारा लक्ष्य शत प्रतिशत हिंदी पत्राचार का है। इसे हमें अवश्य प्राप्त करना है। आप सभी आगामी राजभाषा कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लें और अपने सुझावों से इन्हें और अधिक प्रभावी बनाएं।

'कोयला भारती' के माध्यम से आप अपनी रचनात्मक प्रतिभा को निखारते रहें। अपनी लेखनी से न केवल पत्रिका को समृद्ध करें, बल्कि अन्य साथियों को भी प्रेरित करें। यह पत्रिका हमारी सामूहिक यात्रा का प्रतीक है, जिसमें हम सब मिलकर राजभाषा के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन कर रहे हैं।

अंत में, मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाई देता हूँ और सभी रचनाकारों के सहयोग के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

मुरली कृष्ण रमैय्या

(मुरली कृष्ण रमैय्या)
निदेशक (कार्मिक)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

संपादकीय

मातृभाषा: हमारी पहचान, हमारी विरासत

कोयला भारती का 42वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है। यह विशेष अंक 21 फरवरी, 2025 को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर प्रकाशित किया जा रहा है। इस अवसर पर हमें मातृभाषाओं के महत्व और उनकी समकालीन प्रासंगिकता पर विचार करना चाहिए।

मातृभाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, यह हमारी सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न अंग है। यह वह भाषा है जो हमें अपनी माँ से विरासत में मिली है, जिसमें हमने पहला शब्द सीखा, पहली कविता सुनी और जीवन के पहले पाठ पढ़े। मातृभाषा में सोचने, समझने और अभिव्यक्त करने की हमारी क्षमता स्वाभाविक होती है। यही कारण है कि शिक्षाविद् प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में देने की वकालत करते हैं।

21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने का निर्णय यूनेस्को ने 1999 में लिया था। यह दिवस बांग्लादेश के भाषा आंदोलन की स्मृति में मनाया जाता है, जहाँ 1952 में बांग्ला भाषा की रक्षा के लिए कई लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी। यह दिवस हमें याद दिलाता है कि भाषा केवल संवाद का माध्यम ही नहीं, बल्कि एक समुदाय की सामूहिक चेतना और उसकी सांस्कृतिक विरासत का वाहक भी है।

वैश्वीकरण के इस युग में जब अंग्रेजी का प्रभाव बढ़ रहा है, मातृभाषाओं का संरक्षण और संवर्धन एक बड़ी चुनौती बन गया है। यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया की लगभग 40 प्रतिशत भाषाएँ विलुप्ति के कगार पर हैं। प्रत्येक भाषा के विलुप्त होने के साथ एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत भी समाप्त हो जाती है। इसलिए मातृभाषाओं का संरक्षण आज की सबसे बड़ी आवश्यकताओं में से एक है।

भारत की विशिष्टता उसकी भाषाई विविधता में निहित है। यहाँ प्रत्येक क्षेत्र की अपनी समृद्ध भाषाई परंपरा है, जो सदियों से उस क्षेत्र के लोगों की सांस्कृतिक पहचान का वाहक रही है। भारत में 1600 से अधिक मातृभाषाएँ बोली जाती हैं, जिनमें से 22 भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त है। यह विविधता हमारी सांस्कृतिक धरोहर का अमूल्य हिस्सा है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने मातृभाषा में शिक्षा के महत्व को विशेष रूप से रेखांकित किया है। शोध बताते हैं कि जब बच्चे अपनी मातृभाषा में सीखते हैं, तो उनका मस्तिष्क अधिक सक्रिय और रचनात्मक होता है। मातृभाषा में शिक्षा से बच्चों में अवधारणाओं की गहरी समझ विकसित होती है, उनकी विश्लेषणात्मक क्षमता बढ़ती है और वे जटिल विचारों को बेहतर ढंग से समझ और व्यक्त कर पाते हैं।

यही कारण है कि नई शिक्षा नीति में कम से कम पाँचवीं कक्षा तक और संभव हो तो आठवीं कक्षा तक मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने की सिफारिश की गई है। इससे न केवल शैक्षिक परिणाम बेहतर होंगे, बल्कि हमारी भाषाई विरासत का संरक्षण भी सुनिश्चित होगा।

डिजिटल क्रांति के इस युग में मातृभाषाओं के समक्ष नई चुनौतियां उभर कर सामने आई हैं। वैश्विक संचार में अंग्रेजी की बढ़ती प्रधानता और डिजिटल माध्यमों में अंग्रेजी का वर्चस्व मातृभाषाओं के लिए एक बड़ी चुनौती बन गया है। युवा पीढ़ी का मातृभाषा से दूर होना और रोमन लिपि में भारतीय भाषाओं का प्रयोग भी चिंता का विषय है।

परंतु प्रौद्योगिकी ने मातृभाषाओं के विकास और प्रसार के लिए नए द्वार भी खोले हैं। भारतीय भाषाओं में यूनिकोड का विकास, भाषा कीबोर्ड और फॉन्ट्स की उपलब्धता और भाषा अनुवाद के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित टूल्स ने मातृभाषाओं को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सशक्त उपस्थिति प्रदान की है।

आज स्मार्टफोन और कंप्यूटर पर भारतीय भाषाओं में टाइपिंग, ईमेल, चैटिंग और दस्तावेज़ बनाना बेहद आसान हो गया है। सोशल मीडिया पर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में सामग्री का प्रकाशन तेजी से बढ़ रहा है। ई-कॉमर्स वेबसाइट, सरकारी पोर्टल और मोबाइल एप्लिकेशन भी बहुभाषी हो गए हैं। यह डिजिटल समावेशन मातृभाषाओं के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हमारी गृह पत्रिका 'कोयला भारती' भी राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह पत्रिका हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों को अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करती है। इससे न केवल उनकी रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहन मिलता है, बल्कि कार्यालयी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को भी बल मिलता है।

आशा है कि यह अंक पाठकों को मातृभाषा के प्रति अपने दायित्व को समझने में सहायक होगा। अंत में, मैं उन सभी रचनाकारों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने अपनी रचनाओं से इस अंक को समृद्ध बनाया है। साथ ही, पाठकों से आग्रह है कि वे अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराएं, जिससे हम पत्रिका को और बेहतर बना सकें।

आइए, इस अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर हम अपनी मातृभाषा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करें और उसके संरक्षण और संवर्धन में अपना योगदान दें।

दिलीप कुमार सिंह
संपादक, कोयला भारती

अंक – 42, अर्ध वार्षिक
फरवरी, 2025

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
Bharat Coking Coal Limited

कोयला भारती

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड की गृह पत्रिका

अध्यक्ष
समीरन दत्ता
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

संरक्षक
मुरली कृष्ण रमैया
निदेशक (कार्मिक)

परामर्श
कुमार मनोज
महाप्रबंधक (कार्मिक)/राजभाषा

विशेष सहयोग
सुरेन्द्र भूषण
विभागाध्यक्ष, प्रशासन विभाग

पंकज कुमार सिंह
विभागाध्यक्ष, भुगतान विभाग

ओम प्रकाश सिंह
निदेशक (कार्मिक) के तकनीकी सचिव
निदेशक (कार्मिक) का सचिवालय

अमन कुमार सिंह
प्रबंधक (कार्मिक) प्रशासन विभाग

अरघा सामंता
वरिष्ठ अधिकारी (वित्त), भुगतान विभाग

उप संपादक
उदयवीर सिंह
प्रबंधक (राजभाषा), जनसंपर्क विभाग

सहयोग
महेन्द्र कुमार सिंह, वरीय निजी सहायक
अनिरुद्ध नोनिया, अनुवादक
वंदना गुप्ता, अनुवादक

प्रकाशक
राजभाषा विभाग
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
कोयला भवन, कोयला नगर, धनबाद- 826005
दूरभाष : 0326-2236463
फैक्स : 0326-2230262

'कोयला भारती' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं । इनसे प्रकाशक / संपादक / बीसीसीएल प्रबंधन का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं । अतः पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं उनमें व्यक्त विचारों के लिए रचनाकार उत्तरदायी हैं। न्यायिक सीमा, धनबाद। निःशुल्क, आंतरिक वितरण हेतु।

संपादक
दिलीप कुमार सिंह
प्रबंधक (राजभाषा)

अनुक्रम

भाषा-चिंतन
भाषाओं का संरक्षण और मानवता की साझी विरासत 5
हिंदी के समावेशी विकास में क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान 8
सांस्कृतिक चिंतन
झारखंड की समृद्ध संथाल आदिवासी संस्कृति: एक विश्लेषण 12
तकनीकी आलेख
कोयला उद्योग और एआई की संभावित भूमिका 14
तकनीकी आलेख
अवचेतन मन की शक्ति 16
समसामयिक चर्चा
मोबाइल की लत 18
डिजिटल अरेस्ट 20
रोचक जानकारी
प्यारे पेट्सः रेड इअर स्लाइडर 22
स्वास्थ्य चर्चा
यकृत प्रत्यारोपण 23
कहानी
स्मृतियों का सौदा 27
अपनी भाषा, अपनी पहचान 29
राजभाषा समाचार
10वें वार्षिक राजभाषा सम्मेलन का आयोजन 30
उत्सव
दीक्षा महिला मंडल द्वारा आनंद मेला का भव्य आयोजन 32
संस्मरण
अधूरा सत्य 34
काव्यकुंज
भारत माता 07
भारत राग सुनाओ 17
हमसे टकराओगे 19
मैं लड़की का पिता हूँ 21
कौन खनिक 34
अपनी अपनी खुशियां 35
आजादी 35
ख्वाहिश है कुछ करने की 36
कोई पास कहाँ ठहर पाता है 36
गणतंत्र 37

नोटः 'कोयला भारती' पत्रिका में प्रकाशन हेतु आप अपनी रचनाएँ ई-मेल dilipsingh83@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।

भाषा-चिंतन

भाषाओं का संरक्षण और मानवता की साझी विरासत

(अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस: 25वीं वर्षगांठ के विशेष संदर्भ में)

✍ मुरली कृष्ण रमैय्या

भाषाएँ और उनकी गूँज

मातृभाषा का हम सबके लिए एक विशिष्ट स्थान है। अपनी माँ के बाद यदि हमें कोई गढ़ने का काम करता है, तो वह हमारी मातृभाषा ही होती है। आज दुनिया में 8,324 से अधिक मातृभाषाएँ हैं, लेकिन वैश्वीकरण और सामाजिक परिवर्तनों के कारण इनमें से 40% भाषाएँ विलुप्ति के कगार पर हैं। यह केवल शब्दों का नहीं, बल्कि **मानवीय ज्ञान, संस्कृति और पहचान का संकट** है। प्रत्येक भाषा इस दुनिया को देखने और समझने का एक नजरिया प्रदान करती है। दूसरे शब्दों में कहें तो हमारे पास इस दुनिया को जानने के 8324 विशिष्ट तरीके हैं।

मातृभाषाओं को आसन्न संकट से बचाने के उद्देश्य से 21 फरवरी का दिन पूरी दुनिया में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसकी शुरुआत बांग्लादेश की ऐतिहासिक घटना से जुड़ी है। 1952 में ढाका विश्वविद्यालय के छात्रों ने बंगाली भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी। यह संघर्ष भाषाई अधिकारों की लड़ाई का प्रतीक बना और अंततः संयुक्त राष्ट्र ने 1999 में इस दिन को मातृभाषाओं के संरक्षण के लिए समर्पित किया। आज, यह दिवस न केवल भाषाई विविधता बल्कि मानवीय पहचान की रक्षा का आह्वान करता है।

यह दिवस न केवल भाषाई विविधता को बचाने बल्कि **शिक्षा, समावेशन और स्थायी विकास लक्ष्यों (SDGs)** को प्राप्त करने में भाषाओं की भूमिका को रेखांकित करता है। 2025 में इसकी 25वीं वर्षगांठ मनाई जाएगी, जो एक चौथाई सदी के संघर्ष और सफलताओं का प्रतीक है।

भाषाओं का महत्व

1. सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक एकता

भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि एक सामूहिक स्मृति है। यह किसी समुदाय की परंपराओं, गीतों, कथाओं और रीति-रिवाजों को जीवित रखती है। उदाहरण के लिए, **माओरी भाषा** (न्यूजीलैंड) में "व्हानाऊ" शब्द केवल परिवार को नहीं, बल्कि पूर्वजों से जुड़ाव और प्रकृति के साथ सामंजस्य को दर्शाता है। 1980 के दशक में माओरी भाषा के पतन के बाद, "कोहंगा रेओ" (भाषा के घोंसले) जैसे कार्यक्रमों ने इसे पुनर्जीवित किया, जिससे उनकी सांस्कृतिक पहचान मजबूत हुई।

2. ज्ञान का अदृश्य भंडार

दुनिया की 8300 से अधिक भाषाओं में से प्रत्येक प्रकृति, चिकित्सा और दर्शन का अनूठा ज्ञान समेटे है। **आदिवासी भाषाएँ** जैसे ऑस्ट्रेलिया की "योल्गु" जनजाति की भाषा में समुद्री जीवन और मौसम के बारे में विस्तृत शब्दावली है, जो आधुनिक विज्ञान के लिए महत्वपूर्ण है। वहीं, संस्कृत के प्राचीन ग्रंथ आयुर्वेद और खगोल विज्ञान का आधार हैं। उदाहरण के लिए **पेरू** की "क्वेशुआ" भाषा में एंडीज पर्वतमाला के पारिस्थितिकी तंत्र को समझने के लिए 1,000 से अधिक शब्द हैं, जो जलवायु परिवर्तन से निपटने में मददगार हो सकते हैं। इसी तरह, **भारत** के नागालैंड की "अंगामी" भाषा में पारंपरिक कृषि पद्धतियों का विस्तृत विवरण है, जो टिकाऊ खेती को बढ़ावा दे सकता है।

3. भाषा और मानसिक विकास

अनुसंधान बताते हैं कि मातृभाषा में शिक्षा बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमता को बढ़ाती है। केरल के "आदिवासी एकता परिषद" द्वारा चलाए गए "मातृभाषा आधारित शिक्षण" से आदिवासी बच्चों के शैक्षणिक परिणामों में 40% सुधार देखा गया।

4. शिक्षा और संज्ञानात्मक विकास का आधार

अनुसंधानों से सिद्ध हो चुका है कि मातृभाषा में शिक्षा छात्रों की

समझ, रुचि, और तार्किक क्षमता को बढ़ाती है। यूनेस्को के अनुसार, जो बच्चे अपनी मातृभाषा में पढ़ते हैं, उनके शैक्षणिक परिणाम 30-50% बेहतर होते हैं। उदाहरण के लिए, **इथियोपिया** में "ओरोमिफ़ा" भाषा में प्राथमिक शिक्षा शुरू करने के बाद साक्षरता दर 65% से बढ़कर 85% हो गई। इसी प्रकार, **भारत** के केरल राज्य में आदिवासी बच्चों को मातृभाषा में पढ़ाने से उनकी परीक्षाओं में सफलता दर 40% बढ़ी।

5. सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक एकता

भाषाएँ सामाजिक ताने-बाने को जोड़ने वाली धागा हैं। **न्यूजीलैंड** में माओरी भाषा के पुनरुत्थान ने न केवल उनकी सांस्कृतिक पहचान को मजबूत किया, बल्कि राष्ट्रीय एकता को भी बढ़ावा दिया। वहीं, **दक्षिण अफ्रीका** में 11 आधिकारिक भाषाओं को मान्यता देकर रंगभेद के बाद के समाज में विविधता को सम्मान दिया गया।

संकट की गूँज: लुप्त होती भाषाएँ और उनके प्रभाव

1. आँकड़े और कारण

यूनेस्को के अनुसार, विश्व की 40% भाषाएँ खतरे में हैं, और हर दो सप्ताह में एक भाषा सदा के लिए विलुप्त हो जाती है। इसके प्रमुख कारण हैं:

- **वैश्वीकरण:** अंग्रेजी, मंदारिन जैसी "वैश्विक भाषाओं" का दबाव।
- **शिक्षा और रोजगार:** मातृभाषा को हीन समझा जाना।
- **प्राकृतिक आपदाएँ और विस्थापन:** उदाहरणार्थ, 2004 की सुनामी के बाद अंडमान की "ग्रेट अंडमानी" भाषा के बोलने वाले केवल 50 रह गए।

2. मानवता की अपूरणीय क्षति: बो जनजाति का उदाहरण

वर्ष 2010 में **बोआ सीनियर** की मृत्यु के साथ ही "बो" भाषा सदा के लिए लुप्त हो गई। यह भाषा अंडमान द्वीप समूह की 65,000 साल पुरानी सभ्यता की अंतिम कड़ी थी। इसके साथ ही, उनके गीत, औषधीय ज्ञान और प्रकृति से जुड़े रहस्य भी समाप्त हो गए। हालांकि इस भाषा का संरक्षण डिजिटल माध्यमों में कर लिया गया था।

3. सामाजिक असंतुलन

भाषा के लुप्त होने से समुदायों की आत्म-सम्मान की भावना कमजोर होती है। कनाडा के "इनुइट" समुदाय में अंग्रेजी के प्रभुत्व के कारण युवा पीढ़ी अपनी पहचान से दूर हो रही है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य संकट पैदा हुआ है।

4. सांस्कृतिक विलोपन का उदाहरण: चिली की यगान भाषा

वर्ष 2022 में **क्रिस्टीना काल्डेरॉन** की मृत्यु के साथ ही "यगान" भाषा विलुप्त हो गई। यह भाषा दक्षिण अमेरिका की सबसे प्राचीन संस्कृतियों में से एक थी, जो समुद्री जीवन और जलवायु अनुकूलन के रहस्यों को समेटे थी।

5. शिक्षा प्रणाली की भूमिका

कई देशों में शिक्षा प्रणालियाँ मातृभाषा के बजाय वर्चस्वशाली भाषाओं पर केंद्रित हैं। उदाहरण के लिए, **नाइजीरिया** में 500 से अधिक स्थानीय भाषाएँ हैं, लेकिन शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। इसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों में ड्रॉपआउट दर 60% से अधिक है। केवल कुछ सौ भाषाओं को ही शिक्षा प्रणालियों और सार्वजनिक क्षेत्र में स्थान मिला है, और डिजिटल दुनिया में तो सौ से भी कम भाषाएँ उपयोग होती हैं।

संरक्षण के प्रयास: सफलता की कहानियाँ

1. शिक्षा और नीतिगत बदलाव

- **वेल्श भाषा का पुनरुत्थान:** 20वीं सदी में वेल्श भाषा केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित थी। 1993 में "वेल्श भाषा अधिनियम" लागू कर और स्कूलों में अनिवार्य शिक्षा देकर आज 30% वेल्श युवा इस भाषा में बात करते हैं।
- **हवाईयन भाषा:** "पूनाना लेओ" स्कूलों ने बच्चों को दैनिक जीवन में हवाईयन भाषा सिखाकर इसे पुनर्जीवित किया। 1983 में केवल 50 बोलने वाले थे, आज यह संख्या 24,000 है।

2. प्रौद्योगिकी का सहारा

- **ऐप्स और डिजिटल प्लेटफॉर्म:** "माइस्प्रेक" ऐप ने ऑस्ट्रेलिया की आदिवासी भाषाओं को सिखाने में मदद की।
- **सोशल मीडिया:** मैक्सिको की "ज़ापोटेक" भाषा के यूट्यूब चैनलों ने युवाओं को जोड़ा।

3. अंतरराष्ट्रीय सहयोग

यूनेस्को का "एटलस ऑफ द वर्ल्ड्स लैंग्वेजेज इन डेंजर" भाषाओं की स्थिति पर नजर रखता है। इसके अलावा, "भाषा विविधता सूचकांक" देशों को नीतियाँ बनाने में मदद करता है।

4. बहुभाषी शिक्षा: SDGs की ओर कदम

यूनेस्को के अनुसार, **लक्ष्य 4.5** ("समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा") को प्राप्त करने के लिए मातृभाषा आधारित शिक्षा अनिवार्य है। कुछ सफल उदाहरण निम्नलिखित हैं-

- **बोलीविया:** "शिक्षा सुधार कानून 2010" के तहत 36 स्वदेशी भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाया गया, जिससे साक्षरता दर 92% तक पहुँची।
- **फिनलैंड:** सामी भाषा में शिक्षा देकर स्वदेशी समुदायों को मुख्यधारा से जोड़ा गया।

5. प्रौद्योगिकी और नवाचार

- **गूगल की "लिविंग लैंग्वेजेस" परियोजना** ने 100 से अधिक लुप्तप्राय भाषाओं को डिजिटल रूप में संरक्षित किया है।
- **भारत** में "भाषिनी" एआई प्लेटफॉर्म 22 भारतीय भाषाओं को समर्थन देता है, जिससे डिजिटल विभाजन कम हो रहा है।

6. अंतरराष्ट्रीय पहल और नीतियाँ

- **संयुक्त राष्ट्र का "भाषाई विविधता दशक" (2022-2032):** लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण के लिए वैश्विक फंडिंग और शोध को बढ़ावा।
- **यूनेस्को का "भाषा विविधता सूचकांक":** देशों की नीतियों का मूल्यांकन कर उन्हें सुधारने में मदद।

25वीं वर्षगांठ: एक नए युग का आह्वान

2025 में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की रजत जयंती हमें याद दिलाती है कि भाषाएँ **शांति, न्याय और स्थायी विकास** की आधारशिला हैं। इस अवसर पर हमें तीन प्रमुख लक्ष्यों पर केंद्रित होना चाहिए:

1. शिक्षा प्रणालियों में बहुभाषावाद को प्राथमिकता
2. डिजिटल युग में भाषाओं का अनुकूलन
3. स्वदेशी समुदायों को भाषाई अधिकारों की गारंटी

भाषाएँ बचाना, मानवता बचाना है

भाषाएँ मनुष्यता की सामूहिक बुद्धिमत्ता हैं। इन्हें बचाने के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयास जरूरी हैं। जैसा कि नोबेल विजेता **रिगोबेर्ता मेन्चू** ने कहा, *"एक भाषा का अंत केवल शब्दों का नहीं, बल्कि एक दृष्टिकोण का अंत होता है।"* भाषाओं को बचाने के लिए हमें व्यक्तिगत प्रयासों से लेकर वैश्विक साझेदारियों तक सभी स्तरों पर काम करना होगा। 25वीं वर्षगांठ हमें यह संकल्प लेने का अवसर देती है कि हम भाषाई विविधता को न केवल संरक्षित करेंगे, बल्कि इसे **मानवाधिकार, शिक्षा और विकास** का केंद्र बनाएंगे।

जैसा कि नोबेल विजेता **नेल्सन मंडेला** ने कहा था, *"अगर आप किसी से उसकी भाषा में बात करते हैं, तो वह उसके दिल तक जाती है।"* भाषाओं का संरक्षण केवल शब्दों को बचाना नहीं, बल्कि मानवीय अनुभवों को अमर करना है।

निदेशक (कार्मिक)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

काव्यकुंज

भारत माता

भारत माता को भक्ति से नित नमन करना
सर्वत्र प्रेम भाईचारे को हरा भरा चमन करना
शहीदों के मंदिर बने, नित आरती पूजा करें
शूर वीरों का ज्ञानी विद्वानों का वतन करना
शांति प्रगति के लिए एक मत, एक मन हो
स्वतंत्रता सेनानियों का आदर सम्मान करना
विराट लक्ष्य, दृढ संकल्प, प्रबल आत्मबल हो
वतन की रक्षा प्रगति का पूरा हर वचन करना
अगर हकीकत में शहीदों का मान सम्मान है तो
उनकी हर आरज़ू अरमान, पूरा हर स्वप्न करना
सबका कर्तव्य है, राष्ट्र की सदा रक्षा करना
पुण्य मातृ भूमि को जान से ज्यादा जतन करना
हे माँ भारती तेरी हर संतान को सद्बुद्धि देकर
सबको बलिदानी स्वाभिमानी, नेक सज्जन करना।

✍ **नरेश हमिलपुरकर**
भास्कर नगर, बस स्टैंड रोड
चित्रगुप्पा, बिदर (कर्नाटक)

भाषा-चिंतन

हिंदी के समावेशी विकास में क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान

✍ दिलीप कुमार सिंह

भारतीय भाषाई परिदृश्य की विविधता अद्भुत है। वर्ष 2011 की जनगणना के आंकड़े बताते हैं कि देश में 121 मुख्य भाषाएं और 1,635अन्य भाषाएं बोली जाती हैं। इस विशाल भाषाई वैविध्य के बीच हिंदी का विकास एक रोचक और जटिल प्रक्रिया रही है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत के संविधान में हिंदी के विकास के लिए एक बहुत ही संतुलित नीति बनायी गयी है, जो यह सुनिश्चित करती है कि हिंदी का अखिल भारतीय स्वरूप विकसित हो, जो प्रत्येक दृष्टि में समावेशी हो।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 351 में स्पष्ट तौर पर लिखा है कि संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 351 हिंदी भाषा के विकास और प्रसार से संबंधित एक महत्वपूर्ण प्रावधान है। यह अनुच्छेद न केवल हिंदी के विकास का मार्ग प्रशस्त करता है, बल्कि भारत की भाषाई विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि को भी सुरक्षित रखता है। यह अनुच्छेद भारत की बहुभाषी प्रकृति को ध्यान में रखते हुए बनाया गया, जिसका उद्देश्य हिंदी को एक समृद्ध और समावेशी भाषा के रूप में विकसित करना था। इस अनुच्छेद में क्षेत्रीय भाषाओं के सहयोग से हिंदी भाषा के विकास की नीति बनायी गयी है।

इस अनुच्छेद में विशेष रूप से उल्लेख किया गया है कि हिंदी को भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया जाए। यह प्रावधान भारत की सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित करने और उसे हिंदी भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करने का लक्ष्य रखता है। इससे हिंदी भाषा में सभी क्षेत्रीय संस्कृतियों की झलक दिखाई देती है। इसके साथ ही इसमें हिंदुस्तानी और आठवीं अनुसूची की अन्य भाषाओं के साथ हिंदी के सामंजस्य पर बल दिया गया है। यह प्रावधान क्षेत्रीय भाषाओं की प्रकृति में बिना किसी हस्तक्षेप के उनके रूप, शैली और पदों को हिंदी में आत्मसात करने की बात करता है। इससे हिंदी एक समन्वयात्मक भाषा के रूप में विकसित होती है।

भारत के संविधान निर्माताओं की संकल्पना एक ऐसी हिंदी को विकसित करने की थी, जो पूरे भारत की साझा जबान हो। यह साझा जबान अन्य भाषाओं के सहयोग के बिना संभव नहीं थी। प्रत्येक भाषा में विभिन्न संस्कृतियों के प्रभाव से बहुत से शब्द आते हैं। ये शब्द भाषा के समावेशी रूप को प्रकट करते हैं।

विभिन्न संस्थानों की रिपोर्ट के अध्ययन से पता चला है कि आधुनिक हिंदी के शब्दकोश में लगभग 1,50,000 शब्द हैं। इनमें 30 प्रतिशत तत्सम संस्कृत के शब्द हैं, जबकि 25 प्रतिशत शब्द विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं से लिए गए हैं। इस समृद्धि में भोजपुरी से लगभग 2,000, राजस्थानी से 1,500, पंजाबी से 1,200, बांग्ला से 800 और मराठी से 600 से अधिक शब्दों का योगदान शामिल है।

क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव केवल शब्दों तक ही सीमित नहीं है।

बिहारी भाषाओं के प्रभाव से हिंदी की लिंग व्यवस्था में लचीलापन आया है। दक्षिण भारतीय भाषाओं के प्रभाव से वाक्य विन्यास में विविधता आई है। 2021 के एक अध्ययन के अनुसार, समाचार माध्यमों में 35 प्रतिशत, साहित्य में 28 प्रतिशत और सोशल मीडिया में 42 प्रतिशत शब्द क्षेत्रीय भाषाओं से प्रभावित हैं।

भौगोलिक क्षेत्रों के अनुसार देखें तो पूर्वी क्षेत्र से बांग्ला ने सांस्कृतिक शब्दावली, असमिया ने प्राकृतिक वर्णन और मैथिली ने लोक-संस्कृति से संबंधित शब्द दिए हैं। पश्चिमी क्षेत्र से गुजराती ने व्यापारिक, मराठी ने प्रशासनिक और कोंकणी ने समुद्री शब्दावली का योगदान दिया है। दक्षिण से तमिल ने तकनीकी, तेलुगु ने कला संबंधी, कन्नड़ ने कृषि संबंधी और मलयाळम ने खाद्य पदार्थों से जुड़े शब्द दिए हैं।

हिंदी के अखिल भारतीय स्वरूप को विकसित करने में विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्यकारों और संत कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। असम के महान संत शंकरदेव ने अपने नाटकों के माध्यम से नई सांस्कृतिक धारा को प्रवाहित किया, बंगाल के कवियों ने व्रजबुलि का उपयोग कर अपनी भक्ति भावना को व्यक्त किया, गुजरात के नरसी भगत ने अपने भजनों से समाज को आध्यात्मिक चेतना प्रदान की, महाराष्ट्र के संत नामदेव और तुकाराम ने अपने गीतों से भक्ति का प्रचार किया, राजस्थान की मीरा ने गिरधर नागर के प्रति अपने प्रेम को गीतों और नृत्य के माध्यम से प्रकट किया, गुरु नानक, कबीर और जायसी जैसे संतों ने अपने विचारों के जरिए मानवता की शिक्षा दी और दक्षिण भारत के दार्शनिकों और संतों ने भक्ति के प्रवाह को उत्तर भारत तक पहुँचाया-यह सभी हिंदी के उत्थान और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए स्वर्णिम युग थे।

भारत की अधिकांश भाषाओं की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है। इसलिए हमारी विविध भाषाओं और संस्कृतियों में अलगाव के बावजूद, उनकी भावनाओं का मूल स्वर एक ही है। तेलुगु के महान कवि वेमना और हिंदी के संत कबीर के विचारों में कोई बड़ा अंतर नहीं है। तमिल साहित्य की अंडाल और राजस्थान की मीरा की भक्ति में समानता है। इसी प्रकार मलयालम के एडुत्तच्चन और हिंदी के तुलसीदास की राम भक्ति का चित्रण भी एक-दूसरे के पूरक हैं। यहां तक कि तमिल के सुब्रह्मण्यम भारती और हिंदी के भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने भी समान रूप से राष्ट्र जागरण में योगदान दिया।

यदि हिंदी की बोलियों की बात करें तो सबसे पहले भोजपुरी का नाम आएगा, जो अपनी मिठास और बोलचाल की सरलता के लिए जानी जाती है। भोजपुरी के अलावा अवधी, ब्रज, मगही, हरियाणवी, मारवाड़ी, छत्तीसगढ़ी आदि भाषाओं के शब्दों और साहित्य ने न केवल हिंदी को समृद्ध किया है, बल्कि उसकी रचनात्मकता को भी नए आयाम दिए हैं।

इसके अलावा, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयाळम, बांग्ला, असमिया, उड़िया और पंजाबी जैसी भाषाएँ भी हिंदी के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इनके समृद्ध साहित्य ने हिंदी की भावनात्मक गहराई को और बढ़ाया है। हिंदी में क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान न केवल शब्दों में बल्कि भावनाओं में भी दिखाई देता है। जब हम हिंदी में बोलते हैं, तो उसमें कई क्षेत्रीय शब्द, वाक्य विन्यास और शैली मिलकर एक अद्भुत संगम आकार देते हैं। यह सब मिलकर एक ऐसी भाषाई धारा बनाता है, जो सबको एक साथ जोड़ती है।

भाषा के विकास की प्रक्रिया यह दिखाती है कि किसी भी भाषा को समय और समाज के साथ सामंजस्य बैठाना आवश्यक है। जब भाषा हर क्षेत्र में प्रयोग होती है, तभी वह परिपक्व होती है। संस्कृत इसका सबसे उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसने साहित्य के अलावा अर्थशास्त्र, राजनीति, दर्शन, गणित, ज्योतिष और अन्य विषयों में भी अपनी गहरी छाप छोड़ी है। यह न केवल अपनी अभिव्यक्ति क्षमता में अद्वितीय है, बल्कि आधुनिक भारतीय भाषाओं की जननी भी है। यही वजह है कि सभी आधुनिक भाषाओं में इसके शब्द बहुतायत में मिल जाते हैं। भारतीय भाषाओं में यह तत्त्व आपस में निकटता लाता है।

हिंदी के स्वरूप में जो एक विशेष प्रकार की लचक है वह वास्तव में उस लचक से भिन्न नहीं है, जो जनजीवन की प्रमुख विशेषता है। इस लचक के कारण ही हिंदी अनेक स्रोतों से आये हुए प्रभावों को इस तरह आत्मसात् कर लेती है कि उसकी प्रकृति के अभिन्न अंग बन जाते हैं। एक ओर हिंदी भाषी प्रदेशों की अपनी बोलियां हैं जिन्होंने उसके शब्द भण्डार का निर्माण किया है। दूसरी ओर अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी, पुर्तगाली जैसी विदेशी भाषाएँ हैं, जिन्होंने हिंदी की शब्द-सम्पदा को समृद्ध किया है। तीसरी ओर भारत की अन्य भाषाएं हैं जिन्होंने भाव, भाषा और विचार की दृष्टि से हिंदी को समृद्ध किया है और लगातार करती जा रही हैं।

प्राचीन काल से अब तक आर्य भाषा के रूप में संस्कृत का भारतीय भाषाओं के बीच एक विशिष्ट स्थान रहा है और उसने लगभग सभी भारतीय भाषाओं की शब्दावली को विशेष रूप से आर्य और द्रविड़ भाषाओं की शब्दावली को प्रभावित किया है। इसीलिए आर्य और द्रविड़ भाषाओं की शब्दावली में संस्कृतमूलक तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रचुर प्रयोग होता है। जैसे, 'आक्रमण', 'गति', 'पर्वत', 'श्रम' शब्दों का हिंदी, असमिया, कन्नड़, कश्मीरी, गुजराती, तेलुगु, मराठी, सिंधी भाषाओं में एक ही अर्थ है। इनमें वर्तनी की भी समानता है। ये सभी तत्सम शब्द हैं। हिंदी भाषा के विकास में

संस्कृत और विभिन्न अन्य भारतीय भाषाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुआयामी है।

भारतीय भाषाओं की शब्दावली में सबसे अधिक समानता तत्सम शब्दों में मिलती है। ये वे शब्द हैं जिन्हें विभिन्न भारतीय भाषाओं में संस्कृत से यथावत् ग्रहण कर लिया गया है। तत्सम शब्दों में वर्तनी और अर्थ दोनों की समानता होती है। इस वर्ग के अन्तर्गत आने वाले कुछ शब्द जो हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में समान रूप से प्रयोग किए जा रहे हैं, उनके कुछ उदाहरण आगे दिए जा रहे हैं :

- हिंदी, असमिया, उड़िया, कन्नड़, गुजराती, तमिळ, तेलुगु बांग्ला, मराठी, मलयाळम भाषाओं में 'कटि' का अर्थ है -'कमर',
- हिंदी, असमिया, उड़िया, कन्नड, कश्मीरी, गुजराती, पंजाबी, बांग्ला, मराठी, सिंधी भाषाओं में 'केश' का अर्थ है - 'बाल';
- हिंदी, असमिया, उड़िया, कन्नड, कश्मीरी, गुजराती, पंजाबी, बांग्ला, मराठी, सिंधी भाषाओं में 'दन्त' का अर्थ है - 'दाँत',
- हिंदी, असमिया, उड़िया, कन्नड, कश्मीरी, गुजराती, पंजाबी, बांग्ला, मराठी, मलयाळम, सिंधी भाषाओं में 'नेत्र' का अर्थ है- 'आँख'।

इन सभी भाषाओं से हिंदी में बहुत सी शब्दावली आयी है। हिंदी के विकास पर विभिन्न भाषाओं का निम्नलिखित प्रकार से प्रभाव पड़ा है :

द्रविड़ भाषाओं का व्यापक प्रभाव

द्रविड़ भाषा परिवार ने हिंदी के विकास में बहुआयामी योगदान दिया है। यह योगदान केवल भाषाई नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और साहित्यिक स्तर पर भी है। यह प्रक्रिया निरंतर जारी है और भारत की भाषाई विविधता को समृद्ध कर रही है। द्रविड़ भाषाओं का यह योगदान भारत की समावेशी संस्कृति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। ये भाषाएँ न केवल दक्षिण भारत की सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करती हैं, बल्कि भारत की भाषाई विविधता में महत्वपूर्ण योगदान भी देती हैं। इन भाषाओं की प्राचीनता और समृद्ध साहित्यिक परंपरा ने हिंदी भाषा के विकास को गहराई से प्रभावित किया है।

द्रविड़ भाषाओं के साहित्य का हिंदी में अनुवाद और उनकी साहित्यिक शैलियों का प्रभाव भी महत्वपूर्ण है। तमिल की संगम काव्य परंपरा, तेलुगु की पदकविता, कन्नड़ के वचन साहित्य और मलयाळम की लोक परंपराओं ने हिंदी साहित्य को नई दिशाएँ दी हैं। इन भाषाओं ने हिंदी की ध्वनि व्यवस्था को भी समृद्ध किया है, जैसे 'ळ' ध्वनि का प्रयोग जो मूलतः द्रविड़ भाषाओं की देन है। 'ळ' ध्वनि को मानक हिंदी वर्णमाला के वर्ष 2024 के संस्करण में भी स्थान दिया गया है। बहुत बड़े बाजार की वजह से दक्षिण भारत की फिल्में हिंदी में भी रिलीज करना वर्तमान समय की माँग बन गयी है। इन फिल्मों के हिंदी में आने से हिंदी भाषा के विकास में सहायता प्राप्त हुई है। दक्षिण भारत की परंपराएं, संस्कृति और शब्दावली उत्तर भारत में भी लोकप्रिय हो रही है। उदाहरण के लिए बाहुबली फिल्म के हिंदी संस्करण में विभिन्न डायलॉग में कई शब्द तेलुगु भाषा के आए थे, जो हिंदी भाषियों में संस्कृत शब्दों के रूप में प्रचलित हैं।

पूर्वी भारत की भाषाओं का विशिष्ट योगदान

भारतीय भाषा परिवार में पूर्वी भारत की भाषाओं का विशेष स्थान है। बांग्ला और असमिया, जो इंडो-आर्यन भाषा परिवार की महत्वपूर्ण भाषाएं हैं, ने हिंदी के विकास में बहुमूल्य योगदान दिया है। साहित्य, संस्कृति, समाज और दैनिक जीवन के स्तर पर इन भाषाओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। बांग्ला भाषा का प्रभाव विशेष रूप से साहित्यिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में दिखाई देता है। नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर की रचनाओं ने हिंदी साहित्य को नई दिशा दी। उनकी कविताओं और गीतों के हिंदी अनुवादों ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। इसी तरह बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय और शरतचंद्र चट्टोपाध्याय जैसे साहित्यकारों की रचनाओं ने हिंदी उपन्यास और कहानी साहित्य को प्रभावित किया।

दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाले अनेक शब्द बांग्ला से हिंदी में आए हैं। 'दादा', 'दीदी', 'बाबू' जैसे संबोधन सूचक शब्द; 'गुंडा', 'हुड़दंग', 'हुलड़' जैसे व्यवहारिक शब्द; और 'चंपा', 'घाट', 'पोखर' जैसे प्रकृति से जुड़े शब्द इसके उदाहरण हैं। ये शब्द इतने घुल-मिल गए हैं कि अब इन्हें विशुद्ध हिंदी शब्द माना जाने लगा है।

असमिया भाषा ने भी हिंदी को कई महत्वपूर्ण शब्द दिए हैं। खाद्य पदार्थों से संबंधित 'लाही' (सरसों), 'तेज पत्ता'; वस्तुओं के नाम जैसे 'गाँठी' (गठरी), 'गमछा'; और सांस्कृतिक शब्द जैसे 'बीहु' (त्योहार), 'मेखला' (वस्त्र) असमिया की देन हैं। ये शब्द न केवल भाषा को समृद्ध करते हैं बल्कि पूर्वोत्तर भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को भी प्रतिबिंबित करते हैं।

खान-पान की संस्कृति में भी पूर्वी भारतीय भाषाओं का प्रभाव स्पष्ट है। 'रसगुल्ला', 'संदेश', 'मिष्टी', 'चटनी' जैसे मिठाइयों और व्यंजनों के नाम; 'लुची', 'कचौड़ी', 'पकोड़ा' जैसे पकवानों के नाम हिंदी में प्रचलित हैं। इसी तरह दुर्गा पूजा और बीहू जैसे त्योहारों से जुड़ी शब्दावली भी हिंदी में समाहित हो गई है।

आधुनिक समय में फिल्मों और मीडिया ने इस भाषाई आदान-प्रदान को और गति दी है। बांग्ला सिनेमा और टेलीविजन कार्यक्रमों के माध्यम से कई नए शब्द हिंदी में आए हैं। सोशल मीडिया पर युवा पीढ़ी द्वारा प्रयुक्त भाषा में पूर्वी भारतीय शब्दों का प्रयोग बढ़ा है। 'दादा', 'दीदी' जैसे संबोधन अब पूरे देश में प्रचलित हैं।

व्यावसायिक और प्रशासनिक क्षेत्र में भी पूर्वी भारतीय भाषाओं का योगदान महत्वपूर्ण है। 'बाजार', 'दोकान', 'बिक्री', 'महाजन', 'कारबार' जैसे व्यापारिक शब्द और 'कचहरी', 'थाना', 'मोहरिर', 'दफ्तर' जैसे प्रशासनिक शब्द इन भाषाओं की देन हैं।

इस प्रकार, पूर्वी भारत की भाषाओं का हिंदी पर प्रभाव व्यापक और गहरा है। यह प्रभाव केवल शब्दों तक सीमित नहीं है, बल्कि भाषा की संरचना, साहित्य, संस्कृति और समाज के विभिन्न पहलुओं में देखा जा सकता है। यह भाषाई समन्वय भारत की सांस्कृतिक विविधता और एकता का प्रतीक है, जो निरंतर विकसित हो रहा है और भारतीय भाषाओं को समृद्ध कर रहा है।

पश्चिमी भारतीय भाषाओं का बहुमुखी प्रभाव

पश्चिमी भारत की प्रमुख भाषाएँ मराठी और गुजराती ने हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ये दोनों भाषाएँ इंडो-आर्यन भाषा परिवार की सदस्य हैं और प्राचीन काल से ही व्यापार, साहित्य और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से हिंदी को प्रभावित करती रही हैं। विशेष रूप से व्यापारिक और वाणिज्यिक क्षेत्र में इन भाषाओं का प्रभाव अत्यधिक रहा है।

गुजराती भाषा ने व्यापार से संबंधित अनेक शब्द हिंदी को दिए हैं। जैसे - 'फायदा', 'बहीखाता', 'मुनाफा', 'नुकसान', 'दलाल', 'सट्टा', 'मंदी', 'तेजी', 'खाता', 'बही', 'लेनदार', 'देनदार'। मराठी से भी व्यापारिक शब्द जैसे 'पेढ़ी', 'गल्ला', 'दुकानदार' आदि हिंदी में समाहित हुए हैं। मराठी से दैनिक जीवन से जुड़े अनेक शब्द हिंदी में आए हैं, जैसे - 'बिल्कुल', 'झकास', 'फटाफट', 'टकटक', 'चपचप', 'मचमच'। गुजराती से 'खमंग', 'फाफड़ा', 'ढोकला', 'थेपला' जैसे खान-पान से जुड़े शब्द और 'बापू', 'भाई', 'बहन' जैसे संबोधन सूचक शब्द हिंदी में प्रचलित हुए। ये शब्द आज हिंदी के अभिन्न अंग बन चुके हैं।

मराठी साहित्य ने हिंदी साहित्य को गहराई से प्रभावित किया है। संत ज्ञानेश्वर, तुकाराम, नामदेव की रचनाओं ने हिंदी संत साहित्य को प्रेरित किया। आधुनिक काल में विष्णु सखाराम खांडेकर, देशपांडे, शिवाजी सावंत जैसे लेखकों की रचनाओं के हिंदी अनुवाद ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। गुजराती और मराठी संस्कृति से जुड़े अनेक शब्द और अवधारणाएँ हिंदी में आई हैं। गरबा, डांडिया, गणपति उत्सव जैसे त्योहारों से संबंधित शब्दावली, भजन-कीर्तन की परंपरा और खान-पान की संस्कृति ने हिंदी भाषा को समृद्ध किया है।

पश्चिमी भारत की भाषाओं ने हिंदी के मुहावरों और लोकोक्तियों को भी समृद्ध किया है। मराठी के 'डोक्यावर आभाळ कोसळणे' का हिंदी रूप 'सिर पर आसमान टूट पड़ना', गुजराती के 'आंख नो आंधळो नाम नयनसुख' का हिंदी रूप 'आँख का अंधा नाम नयनसुख' जैसे मुहावरे इसके उदाहरण हैं।

वर्तमान समय में सिनेमा, टेलीविजन और सोशल मीडिया के माध्यम से पश्चिमी भारत की भाषाओं का प्रभाव और बढ़ा है। बॉलीवुड फिल्मों में मराठी और गुजराती डायलॉग, गीत और शब्दों का प्रयोग आम हो गया है। युवा वर्ग की भाषा में 'भिडू', 'एकदम', 'फटाफट' जैसे शब्द प्रचलित हैं। आधुनिक व्यावसायिक जगत में गुजराती और मराठी व्यापारिक शब्दावली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। बैंकिंग, बीमा, शेयर बाजार जैसे क्षेत्रों में प्रयुक्त अनेक शब्द इन भाषाओं से आए हैं। प्रशासनिक भाषा में भी इन भाषाओं का योगदान महत्वपूर्ण है।

पश्चिमी भारत की भाषाओं का हिंदी पर प्रभाव बहुआयामी और गहरा है। यह प्रभाव भाषा के विभिन्न स्तरों - शब्दावली, वाक्य संरचना, मुहावरे, साहित्य और संस्कृति में देखा जा सकता है। विशेष रूप से व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में इन भाषाओं का योगदान अमूल्य है। यह भाषाई आदान-प्रदान भारतीय भाषाओं की परस्पर निर्भरता और समृद्धि का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो भारत की सांस्कृतिक विविधता और एकता को प्रदर्शित करता है।

इस प्रकार, भारत की विभिन्न भाषाएं हिंदी को निरंतर समृद्ध कर रही हैं। यह भाषाई आदान-प्रदान न केवल शब्दों तक सीमित है, बल्कि साहित्य, संस्कृति, विचारधारा, जीवन-शैली और सामाजिक मूल्यों के स्तर पर भी हो रहा है। यह प्रक्रिया हिंदी को एक जीवंत, लचीली और समावेशी भाषा बनाती है, जो भारत की सांस्कृतिक विविधता का प्रतिबिंब है।

हिंदी सब भारतीय भाषाओं के लिए मिलन-सेतु है, जहाँ उसके परस्पर सद्भाव, सौहार्द और समरसता का प्रस्फुटन होता है। इनमें परस्पर विरोध नहीं है। हिंदी की उन्नति सभी भाषाओं की उन्नति है और सबकी उन्नति हिंदी की उन्नति है। सभी के बीच विचार की एक ही धारा है। उनमें एक ही आत्मा का स्पंदन है और वे भारत की आकांक्षाओं को समान रूप में व्यक्त करती हैं। वे एक ही लड़ी में पिरोई हुई मणियों की तरह हैं जो अपने आप में अलग-अलग लेकिन मिलकर मनोहारी हैं। अतः समय की पुकार है और स्थिति का यही तकाज़ा है कि बाहरी भेदों की काल्पनिक दीवारों को ध्वस्त कर एकात्मकता की नींव पर नये भारत का प्रासाद खड़ा किया जाये।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिंदी का समावेशी विकास भारत की भाषाई विविधता का एक सुंदर उदाहरण है। यह प्रक्रिया न केवल भाषाई एकता को बढ़ावा दे रही है, बल्कि भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को भी संरक्षित कर रही है।

प्रबंधक (राजभाषा)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

सांस्कृतिक चिंतन

झारखंड की समृद्ध संथाल आदिवासी संस्कृति: एक विश्लेषण

✍ बिद्युत साहा

परिचय

झारखंड राज्य के संथाल परगना क्षेत्र में निवास करने वाले संथाल आदिवासी भारत की सबसे प्राचीन और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध जनजातियों में से एक है। यह समुदाय अपनी विविधतापूर्ण परंपराओं, कलाओं, त्योहारों और सामाजिक व्यवस्था के लिए जाना जाता है। संथाल संस्कृति न केवल अपने अनूठेपन में बल्कि देश की अन्य संस्कृतियों के साथ सामंजस्य बनाए रखने में भी सक्षम है। उदाहरण के लिए, केरल के जलीकट्टू की तरह यहाँ भी पशुओं से जुड़े पारंपरिक खेलों का महत्व है। यह आलेख संथाल समाज के इतिहास, सामाजिक संरचना, कला, संगीत, त्योहारों और सांस्कृतिक समानताओं को गहराई से विश्लेषित करेगा।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

संथाल समुदाय का इतिहास सदियों पुराना है। माना जाता है कि यह समुदाय भारत के मध्य और पूर्वी क्षेत्रों में फैला हुआ था, लेकिन 18वीं सदी में ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों के कारण इन्हें संथाल परगना की ओर पलायन करना पड़ा। 1855 का संथाल हूल (विद्रोह) इस समुदाय के संघर्ष और स्वाभिमान का प्रतीक है, जिसने ब्रिटिश शासन के खिलाफ आदिवासी अधिकारों की लड़ाई को नई दिशा दी। यह विद्रोह न केवल ऐतिहासिक है, बल्कि संथाल सांस्कृतिक चेतना का आधार भी है। 1855-56 का संथाल विद्रोह इस समुदाय के स्वाभिमान और स्वतंत्रता की भावना का प्रतीक है, जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को भी प्रेरित किया। इस समुदाय ने भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में प्रवास किया और अंततः झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और बिहार के कुछ हिस्सों में स्थायी रूप से बस गए।

सामाजिक संरचना और पारिवारिक मूल्य

संथाल समाज की संरचना सामूहिकता और समानता पर आधारित है। इनकी सामाजिक व्यवस्था में 'मांझी परगना' (ग्राम प्रधान) और 'परगनाइत' (न्यायाधीश) जैसे पद होते हैं, जो गाँव के निर्णय लेते हैं। परिवार में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है, हालाँकि पुरुष प्रधानता का चलन भी देखा जाता है। शिक्षा और आधुनिकता के प्रभाव के बावजूद, संयुक्त परिवार प्रणाली और सामुदायिक निर्णयों का महत्व आज भी कायम है।

संथाली आदिवासियों में बेटियों के लिए लड़का खोजना गलत माना गया है। लड़का पक्ष स्वयं लड़की के घर पहुंचकर उनके पिता व अभिभावक से लड़की का हाथ मांगते हैं। विवाह के बाद यदि भूल से भी वर पक्ष के किसी व्यक्ति ने दहेज की बात मुंह से निकाली तो समाज की ओर से कठोर दंड दिया जाता है।

धार्मिक विश्वास और प्रकृति पूजा

संथालों का धार्मिक दर्शन प्रकृति केंद्रित है। वे 'मरांग बुरु' (सर्वोच्च देवता) और 'जाहेर एरा' (वन देवी) जैसे प्राकृतिक तत्वों की पूजा करते हैं। इनके अनुष्ठानों में पेड़ों, नदियों और पहाड़ों को दैवीय मानकर उनकी आराधना की जाती है। यह विश्वास न केवल धार्मिक बल्कि पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से भी प्रासंगिक है।

सांस्कृतिक उत्सव और त्योहार

संथाल संस्कृति में त्योहारों का विशेष स्थान है। 'सोहराई' (फसल उत्सव), 'बाहा' (वसंत त्योहार), और 'करम' (नृत्य उत्सव) प्रमुख हैं। सोहराई के दौरान पशुओं को सजाया जाता है और उनकी पूजा की जाती है, जो केरल के जलीकट्टू की तरह पशु-मानव संबंधों को दर्शाता है। 'सरहुल' त्योहार में प्रकृति की उर्वरता को समर्पित नृत्य और गीत होते हैं, जो समुदाय की एकजुटता को मजबूत करते हैं।

लोक कलाएँ और शिल्प

संथाल समुदाय की कलात्मक अभिव्यक्ति उनकी दीवार चित्रकारी ('कोहबर'), लकड़ी की नक्काशी और हस्तशिल्प में देखी जा सकती है। महिलाएँ 'पिटकरा' (चावल के पेस्ट से बने चित्र) बनाने में निपुण होती हैं। ये कलाएँ न केवल सौंदर्य बोध को दर्शाती हैं, बल्कि पौराणिक कथाओं और दैनिक जीवन के दृश्यों को भी चित्रित करती हैं।

संगीत और नृत्य: सांस्कृतिक पहचान का आधार

संथाल संगीत में 'बाँसुरी', 'तुमड़क' (ढोल), और 'ढाक' (ड्रम) जैसे वाद्ययंत्रों का प्रयोग होता है।

'लंगदेय' और 'दोंग' नृत्य समूह में किए जाते हैं, जो अक्सर पौराणिक कथाओं को दर्शाते हैं। यह नृत्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक संदेश और इतिहास को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का माध्यम भी है।

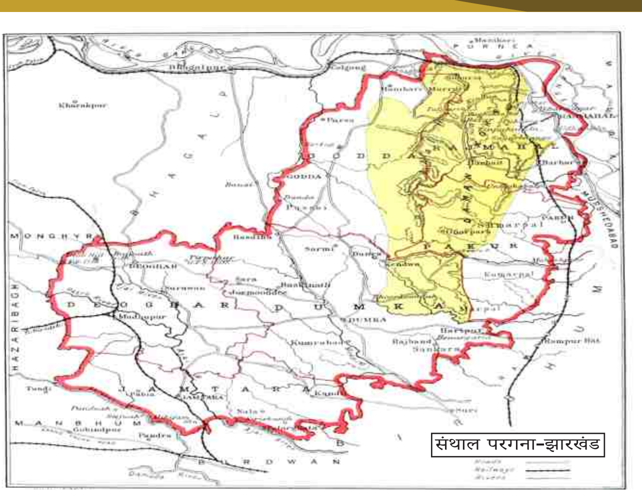
संथाल परगना-झारखंड

त्योहार और उत्सव

संथाल समुदाय के प्रमुख त्योहारों में सोहराई, बाहा, मागे, और करम शामिल हैं। ये त्योहार प्रकृति के साथ उनके गहरे संबंध को दर्शाते हैं और कृषि चक्र से जुड़े हैं।

1. सोहराई: फसल कटाई का त्योहार
2. बाहा: वसंत ऋतु का स्वागत
3. करम: युवाओं का त्योहार
4. मागे: नए साल का स्वागत

वेशभूषा और आभूषण

संथाल पुरुष और महिलाएं पारंपरिक वस्त्र पहनते हैं। पुरुष धोती-कुर्ता पहनते हैं, जबकि महिलाएं साड़ी पहनती हैं। आभूषणों में हंसुली, टाड़, और पचनिया प्रमुख हैं। इन आभूषणों का निर्माण मुख्यतः चांदी से किया जाता है।

आवास और वास्तुकला

संथाल घरों की वास्तुकला उनकी सांस्कृतिक विशेषताओं को प्रतिबिंबित करती है। घर मिट्टी के बने होते हैं और छत खपरैल की होती है। घरों की दीवारों पर सुंदर चित्रकारी की जाती है, जो उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति का उदाहरण है।

प्रमुख आर्थिक गतिविधियां

संथाल समुदाय की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि और वन-उत्पादों पर निर्भर है। पारंपरिक खेती के अलावा, वे वन्य उत्पादों का संग्रह, शिकार और मछली पकड़ने जैसी गतिविधियों में भी संलग्न रहते हैं। आधुनिक समय में कई संथाल युवा शिक्षा और रोजगार के लिए शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। संथाल आदिवासियों की प्रमुख आर्थिक गतिविधियां निम्नलिखित हैं-

1. कृषि
2. वन-उत्पाद संग्रह
3. पशुपालन
4. हस्तशिल्प

पारंपरिक खेल और शारीरिक कौशल

संथाल समुदाय में विभिन्न पारंपरिक खेल प्रचलित हैं। ये खेल न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि युवाओं में शारीरिक और मानसिक क्षमताओं के विकास में भी सहायक हैं। संथाल युवाओं में 'लाठी युद्ध' और 'धनुष-बाण' प्रतियोगिताएँ लोकप्रिय हैं। केरल के जलीकट्टू की तरह यहाँ भी 'बैलगाड़ी दौड़' और 'मुर्गा युद्ध' जैसे खेल होते हैं, जो साहस और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देते हैं। ये खेल सांस्कृतिक विरासत और मनोरंजन का अनूठा संगम हैं।

भाषा और साहित्यिक परंपरा

'संथाली' भाषा, जो ऑस्ट्रो-एशियाटिक परिवार से संबंधित है, इस समुदाय की पहचान है। 'ओल चिकी' लिपि में लिखे गए लोकगीत और कथाएँ मौखिक साहित्य का हिस्सा हैं। पंडित रघुनाथ मुर्मू द्वारा विकसित इस लिपि ने संथाली भाषा को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आधुनिक चुनौतियाँ और संरक्षण के प्रयास

वैश्वीकरण और शहरीकरण के कारण संथाल संस्कृति पर पारंपरिक मूल्यों के क्षरण का खतरा मंडरा रहा है। सरकारी योजनाएँ जैसे 'ट्राइबल रिसर्च इंस्टीट्यूट' और स्थानीय संगठन सांस्कृतिक विरासत को बचाने के लिए कार्यरत हैं। शिक्षा और डिजिटल माध्यमों के जरिए युवाओं को जोड़ने की पहल भी की जा रही है।

निष्कर्ष

संथाल परगना की संस्कृति भारत की सांस्कृतिक विविधता का एक जीवंत उदाहरण है। यह समुदाय अपनी लचीली सामाजिक संरचना, प्रकृति के प्रति सम्मान और कलात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से निरंतर विकसित हो रहा है। अन्य संस्कृतियों के साथ इसकी समानताएँ राष्ट्रीय एकता को मजबूती प्रदान करती हैं। हालाँकि, आधुनिक दबावों के बीच इसकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। भारत कोकिंग कोल लिमिटेड द्वारा कई बार संथाल आदिवासियों के क्षेत्र में सीएसआर कार्यों के तहत कंबल वितरण व अन्य कल्याणकारी कार्यक्रम चलाए गए हैं।

महाप्रबंधक (का./झरिया मास्टर प्लान)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

तकनीकी आलेख

कोयला उद्योग और एआई की संभावित भूमिका

✍ पुलपुल झा

विविध मंचों और सेमिनारों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आकर्षक क्षेत्र कोयला खनन परिदृश्य को नया रूप देने की क्षमता पर चर्चा हो रही है। कोयला उद्योग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के प्रयोग की संभावनाओं व चुनौतियों पर विमर्श का फलक विस्तृत हो रहा है।

दरअसल, विगत कुछ समय से कोयला उद्योग में नई तकनीकों व प्रौद्योगिकियों का प्रयोग काफी बढ़ा है, जिसके फलस्वरूप इस उद्योग में परिवर्तनकारी बदलाव दृष्टिगोचर हुआ है।

कोयला उद्योग में एआई की संभावित भूमिका और समग्र दक्षता और उत्पादकता पर इसके प्रभाव की बात करें, तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) कोयला उद्योग में विभिन्न प्रक्रियाओं को स्वचालित और अनुकूलित कर सकता है, जिससे वे अधिक कुशल और सटीक बन सकते हैं। यह वांछित मापदंडों को निर्धारित कर सकता है, भविष्य के रुझानों और कीमतों की भविष्यवाणी करने के लिए कोयले की मांग का विश्लेषण कर सकता है। साथ ही, खनन और प्रसंस्करण में ऊर्जा की खपत को अनुकूलित भी कर सकता है।

हुआवेई और शेडोंग एनर्जी ग्रुप द्वारा पंगु माइन मॉडल को संयुक्त लॉन्च किया गया है, जो ऊर्जा क्षेत्र और विशेष रूप से कोयला उद्योग के लिए दुनिया का पहला वाणिज्यिक AI मॉडल है। इस मॉडल ने कोयला खनन, सुरंग निर्माण, प्राथमिक परिवहन, सहायक परिवहन, लिफ्टिंग, सुरक्षा निगरानी, चट्टान फटने की रोकथाम, कोयला तैयारी और कोकिंग से संबंधित 21 अनुप्रयोग परिदृश्यों की पहचान की है।

एआई प्रौद्योगिकियों का उपयोग कोयला भण्डार की खोज, ड्रिलिंग, खनन, प्रसंस्करण और उपकरण रखरखाव के लिए किया जा सकता है। यह भूगर्भीय डेटा का विश्लेषण कर आशाजनक कोयला भंडार का पता लगा सकता है। यह गुणवत्ता नियंत्रण और दुर्घटना की रोकथाम को भी अनुकूलित कर सकता है। साथ ही, कोयले की गुणवत्ता की निगरानी कर सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता सफाई और छंटाई मापदंडों का निर्धारण कर सकता है तथा संभावित विफलताओं की ओर भी ध्यानाकृष्ट कर सकता है, जिससे उद्योग की समग्र दक्षता बढ़ सकती है।

कोयला खनिकों के लिए सुरक्षा स्थितियों को बेहतर बनाने और कोयला खनन क्षेत्र में कार्यस्थल पर होने वाली दुर्घटनाओं को कम करने के लिए एआई का उपयोग भी किया जा सकता है। इस तकनीक को अपनाने से खनन कर्मियों की सुरक्षा में काफी सुधार हो सकता है और कार्यस्थल पर होने वाली दुर्घटनाओं में कमी आ सकती है। इसके अनुप्रयोग दुर्घटनाओं और कार्य स्थितियों की निगरानी से लेकर सुरक्षा डेटा विश्लेषण, वर्चुअल प्रशिक्षण और स्वचालन तक फैले हुए हैं।

कोयला के उपयोग से संबंधित वर्तमान पर्यावरणीय चिंताओं को देखते हुए, कोयला उद्योग के भीतर स्वच्छ और अधिक टिकाऊ प्रथाओं को विकसित करने के लिए एआई का लाभ उठाया जा सकता है। इस क्षेत्र के विशेषज्ञ अपने आलेखों के जरिए बता रहे हैं कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कोयला उद्योग के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए स्वच्छ और अधिक टिकाऊ प्रथाओं को विकसित करने के लिए किया जा सकता है। यह आपातकालीन ऊर्जा स्रोतों, वैकल्पिक ऊर्जा बिजली संयंत्रों और ऊर्जा भंडारण प्रणालियों को विकसित करने के लिए एल्गोरिदम बना सकता है और प्रदूषण के स्तर की निगरानी के लिए कोयला खदानों और बिजली संयंत्रों के आसपास के वातावरण का विश्लेषण कर सकता है।

जहाँ तक बात कोयला उद्योग में एआई प्रौद्योगिकियों को एकीकृत करने में चुनौतियों की बात करें, तो सबसे बड़ी समस्याओं में से एक नियमित AI प्रशिक्षण के लिए उपलब्ध डेटा की कमी है। हम विश्वविद्यालयों, शोध केंद्रों और स्वतंत्र अध्ययन समूहों के साथ सहयोग करके डेटा एकत्र करने या आवश्यक डेटाबेस बनाने के

माध्यम से उस समस्या को हल करने में मदद कर सकते हैं। इससे एक और समस्या उत्पन्न होती है: इस डेटा का कुछ हिस्सा गोपनीय है। अपर्याप्त डेटा सुरक्षा से इस जानकारी का दुरुपयोग हो सकता है, इसलिए डेटा सुरक्षा, एन्क्रिप्शन, एक्सेस कंट्रोल और निगरानी का उच्च स्तर लागू किया जाना आवश्यक होगा। यहां यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि मशीन लर्निंग, डेटा विश्लेषण और एल्गोरिदम विकास में पर्याप्त क्षेत्र ज्ञान वाले योग्य विशेषज्ञों की कमी है।

एआई को लागू करने से नौकरियों के नुकसान के बारे में भी चर्चा हो रही हैं। चिंताएँ स्वाभाविक हैं। इसके लिए सार्वजनिक संवाद में शामिल होना अनिवार्य होगा। आवश्यक शोध, प्रशिक्षण और विकास को आगे बढ़ाने के लिए सरकारी एजेंसियों, शिक्षाविदों और प्रोफेशनलों के सहयोग की आवश्यकता पड़ेगी, तभी हम कोयला उद्योग में एआई कार्यान्वयन के नैतिक और वैज्ञानिक पहलुओं पर विचार करना शुरू कर सकते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) जैविक वातावरण, संचय इतिहास, भूकंपीय गतिविधि, बढ़ते खतरे और जमीन में तनाव के बारे में बड़ी मात्रा में डेटा को संसाधित कर सकती है, जिससे संभावित पतन की भविष्यवाणी की जा सकती है।

एक बार जब एआई को यह सीखने का समय मिल जाता है कि सामान्य वातावरण कैसा दिखता है, तो यह गैस निर्माण या चाल के धंसने की पिछली घटनाओं के डेटा का उपयोग करके पूर्वानुमान मॉडल विकसित करने में मदद कर सकता है। मैंने पहले जिस पंगु माइन मॉडल का उल्लेख किया था, वह तनाव से राहत देने वाली ड्रिलिंग की गुणवत्ता का विश्लेषण कर सकता है और कर्मियों को गुणवत्ता सत्यापन में सहायता कर सकता है, जिससे उनके समीक्षा कार्यभार में 80% से अधिक की कमी आती है। ये अनुप्रयोग सुरक्षा प्रणालियों और कर्मियों के प्रशिक्षण के विकास में भी शामिल हो सकते हैं।

मेरा मानना है कि कोयला उद्योग में एआई प्रौद्योगिकियों के सभी पहलुओं में डेटा सुरक्षा और गोपनीयता को शामिल किया जाना चाहिए।

एआई सिस्टम का अध्ययन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले डेटा को उद्योग के विभिन्न पहलुओं को प्रतिबिंबित करना चाहिए, जिसमें विभिन्न भंडार, प्रयुक्त उपकरण और खनन के प्रकार के डेटा शामिल हैं। त्रुटियों और विकृतियों को ठीक करने और विसंगतियों का पता लगाने के लिए इसका विश्लेषण करने के लिए डेटा गुणवत्ता नियंत्रण प्रक्रियाओं को लागू करना आवश्यक है। कोयला उद्योग विशेषज्ञों द्वारा डेटा जांच और नियमित अपडेट से यह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी कि डेटा प्रासंगिक है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि डेटा गुणवत्ता आश्वासन एक सतत प्रक्रिया है और कोयला उद्योग को एआई सिस्टम की सटीकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए इसे बेहतर बनाने के लिए लगातार काम करना चाहिए।

हालाँकि, यह समझना महत्वपूर्ण है कि एआई कोई रामबाण नहीं है और इसका मूल्यांकन अन्य सुरक्षा तरीकों के मुकाबले किया जाना चाहिए।

संक्षेप में, एआई कोयला उद्योग को आधुनिक तकनीक की गति के साथ तालमेल रखते हुए अपने संचालन को अनुकूलित और विविधतापूर्ण बनाने में मदद कर सकता है। इसे हानिकारक प्रभावों को कम करते हुए आउटपुट बढ़ाने के लिए प्रदर्शन को अनुकूलित करके या मिलान के लिए आउटपुट स्तर को स्वचालित रूप से बदलने के लिए बाजार की मांग का पूर्वानुमान लगाकर प्राप्त किया जा सकता है। नवीकरणीय ऊर्जा का भविष्य चाहे जो भी हो, लेकिन, मोटी बात यह भी है कि कोयला उद्योग को नए हितों, उद्योगों और हितधारकों के अनुरूप ढलने की जरूरत है।

एआई-ड्राइवल ऑटोमेशन कोयला उद्योग में कुछ नौकरियों की जगह ले सकता है। उदाहरण के लिए, यदि कोयले का पता चलता है, तो एआई-संचालित मशीनें वह काम कर सकती हैं जो पहले मैन्युअल रूप से किया जाता था, जैसे- कोयले की ड्रिलिंग या परिवहन। दुर्घटनाओं को रोकने और समस्याओं का समय पर समाधान करने के लिए कर्मियों के स्वास्थ्य या उपकरणों की स्थिति की लगातार निगरानी करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग किया जा सकता है। यह परिवहन लागत को कम कर सकता है और कोयला वितरण की दक्षता में सुधार कर सकता है। इसके अलावा, यह कोयला उद्योग में एकत्र किए गए बड़ी मात्रा में डेटा का विश्लेषण कर सकता है, पैटर्न की पहचान करने और अधिक सटीक निर्णय लेने में मदद कर सकता है।

एआई प्रौद्योगिकियों का निर्माण करते समय डेटा सुरक्षा और गोपनीयता सुनिश्चित करना बहुत उच्च प्राथमिकता है, कोयला जैसे उद्योग में तो और भी अधिक। भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण जैसे सभी संवेदनशील डेटा को एन्क्रिप्ट किया जाना चाहिए, नियंत्रण प्रणालियों तक पहुंच अधिकृत कर्मियों तक सीमित होनी चाहिए और सर्वर की भौतिक सुरक्षा पर भी बहुत अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। एक बार जब आपके पास ये सुरक्षा उपाय हो जाते हैं, तो डेटा सुरक्षा और सूचना लीक के महत्व पर कर्मचारी प्रशिक्षण सर्वोपरि हो जाता है। इस प्रकार के डेटा के साथ काम करते समय कमजोरियों, सुरक्षा विनियमन और अनुपालन तथा नेटवर्क सुरक्षा रखरखाव को देखने के लिए नियमित सुरक्षा ऑडिट सभी महत्वपूर्ण और आवश्यक कदम है।

वरीय ओवरमैन, बस्ताकोला कोलियरी,
बस्ताकोला क्षेत्र
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

आलेख

अवचेतन मन की शक्ति

भाव्या शक्ति

अवचेतन मन, जिसे अंग्रेज़ी में sub-conscious mind कहा जाता है, हमारे मन और विचारों का वह हिस्सा है जो सीधे हमारे नियंत्रण में नहीं होता, लेकिन हमारे जीवन पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है। यह हमारे अनुभवों, भावनाओं और विचारों को संग्रहीत करता है और हमारे व्यवहार, निर्णय और दृष्टिकोण को प्रभावित करता है। अवचेतन मन की शक्ति को समझना और इसे सही दिशा में उपयोग करना हमें सफलता, खुशी और संतोष की ओर ले जा सकता है।

अवचेतन मन क्या है?

अवचेतन मन हमारे मन का वह हिस्सा है जो हमारी चेतनता के नीचे स्थित होता है। यह उन सभी अनुभवों, विचारों और भावनाओं का संग्रह है जो हमारे जीवन के विभिन्न क्षणों में हमारे साथ होते हैं। यह हमारे चेतन मन की तुलना में कहीं अधिक शक्तिशाली और व्यापक है। हमारे रोजमर्रा के कार्यों और निर्णयों में इसका प्रभाव अदृश्य होता है, लेकिन यह हर समय सक्रिय रहता है।

अवचेतन मन की संरचना

अवचेतन मन को समझने के लिए हमें इसे तीन मुख्य भागों में बांटकर देखना होगा:

1. **व्यक्तिगत अवचेतन (Personal subconsious) :** इसमें हमारे व्यक्तिगत अनुभव, यादें, और भावनाएँ शामिल होती हैं। यह हमारे दैनिक जीवन की घटनाओं और अनुभवों का संग्रह है।

2. **सामूहिक अवचेतन (Collective Subconscious) :** यह वह हिस्सा है जो मानव जाति के सामूहिक अनुभवों और ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें हमारे पूर्वजों के अनुभव और सांस्कृतिक धारणाएँ शामिल होती हैं।

3. **गहन अवचेतन (Deep Subconscious) :** यह हमारे सबसे गहरे, अज्ञात और प्राचीन भावनाओं और धारणाओं का संग्रह है। यह हमारी अंतर्मन की गहराई में छुपा होता है और हमारे सबसे गहरे, डर, आशाएँ और विश्वासों को दर्शाता है।

अवचेतन मन की कार्यप्रणाली

अवचेतन मन की कार्यप्रणाली बहुत ही अद्भुत और जटिल है। यह हमारे सोचने के तरीकों, आदतों और व्यवहारों को प्रभावित करता है। यह हमारे चेतन मन के विचारों और अनुभवों को संग्रहित करता है और उन्हें हमारे जीवन में लागू करता है।

(क) स्मृति और अनुभव: अवचेतन मन हमारे सभी अनुभवों और यादों को संग्रहित करता है, चाहे वे अच्छे हों या बुरे यह हमारे चेतन मन को आवश्यक जानकारी प्रदान करता है जब हमें इसकी आवश्यकता होती है।

(ख) आदतें और व्यवहार : हमारे दैनिक जीवन में जो आदतें और व्यवहार होते हैं, वे अवचेतन मन के प्रभाव से होते हैं। हमारी दिनचर्या, जैसे कि ब्रश करना, ड्राइव करना या खाना पकाना। सब अवचेतन मन की यादों और आदतों पर आधारित होती हैं।

(ग) भावनाएँ और विश्वास : अवचेतन मन हमारी भावनाओं और विश्वासों को संचालित करता है। यह हमारे जीवन में घटने वाली घटनाओं पर हमारी प्रतिक्रियाओं को प्रभावित करता है और हमारे आत्मविश्वास, डर और उम्मीदों को निर्धारित करता है।

अवचेतन मन की शक्ति का उपयोग

अवचेतन मन की शक्ति को सही तरीके से उपयोग करने से हम अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। इसके लिए हमें कुछ विशेष तकनीकों और अभ्यासों का सहारा लेना पड़ता है।

(क) ध्यान (Meditation) : ध्यान के माध्यम से हम अपने अवचेतन मन तक पहुंच सकते हैं और इसे शांत कर सकते हैं। ध्यान हमारे मन को शांति और स्थिरता प्रदान करता है और हमें अपने गहरे विचारों और भावनाओं को समझने में मदद करता है।

(ख) सकारात्मक सोच (Positive Thinking) : हमारे विचार हमारे जीवन को आकार देते हैं। सकारात्मक सोच के माध्यम से हम अपने अवचेतन मन को सकारात्मक निर्देश दे सकते हैं और अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं।

(ग) दृश्यकरण (visualization): दृश्यकरण एक तकनीक है जिसमें हम अपने लक्ष्यों और सपनों को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। यह हमारे अवचेतन मन को प्रेरित करता है और हमें अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर होने में मदद करता है।

अवचेतन मन की शक्ति का प्रभाव

अवचेतन मन की शक्ति का प्रभाव हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं में देखा जा सकता है।

स्वास्थ्य : अवचेतन मन हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। सकारात्मक सोच और ध्यान के माध्यम से हम अपने स्वास्थ्य में सुधार ला सकते हैं।

संबंध : हमारे संबंधों में भी अवचेतन मन की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। हमारी भावनाओं और विश्वासों का प्रभाव हमारे संबंधों पर पड़ता है।

सफलता : अवचेतन मन हमारी सफलता को भी प्रभावित करता है। हमारे लक्ष्यों और सपनों को प्राप्त करने में यह हमारी मदद करता है।

आत्म-सम्मान : अवचेतन मन हमारे आत्म-सम्मान को भी प्रभावित करता है। सकारात्मक सोच और दृष्टिकोण के माध्यम से हम अपने आत्म-सम्मान को बढ़ा सकते हैं।

अवचेतन मन की शक्ति अद्वितीय और अनमोल है। यह हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित करता है और हमें सफलता, खुशी और संतोष की ओर ले जा सकता है। इसके प्रभाव को समझना और इसे सही दिशा में उपयोग करना हमें एक बेहतर और समृद्ध जीवन की ओर अग्रसर कर सकता है। ध्यान, सकारात्मक सोच, दृश्यकरण और स्पष्ट उद्देश्य के माध्यम से हम अपने अवचेतन मन की शक्ति को जागृत कर सकते हैं और अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। अवचेतन मन की शक्ति को अपनाएं और अपने जीवन को अद्वितीय और सार्थक बनाएं।

कर्मचारी स्थापना विभाग
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

काव्यकुंज

भारत राग सुनाओ

हिंद धरा पर फूल खिलाओ, भारत राग सुनाओ।
महक उठे फुलवारी सारी, सबको गले लगाओ।।

कर्म वीर की पावन धरती, वीरों की है गाथा।
भाव सुमन कर अर्पण उनको, चलो नवाते माथा।।
लाल किले पर सजा तिरंगा, गान हिंद का गाओ।
हिंद धरा पर फूल खिलाओ, भारत राग सुनाओ।।

खड़ा हिमालय प्रहरी बनकर, सीना ताने सेना।
उनको नमन करें कर जोड़े, आदर उनको देना।।
रंग बसंती चुनरी धानी, केसर तिलक लगाओ।
हिंद धरा पर फूल खिलाओ, भारत राग सुनाओ।।

प्राणों का बलिदान दिया है, सूली चढ़े दिवाने।
रक्त बहाकर चले गए जो, अमर हुए परवाने।।
आजादी की समर-कहानी, बच्चों को बतलाओ।
हिंद धरा पर फूल खिलाओ, भारत राग सुनाओ।।

सत्य अहिंसा धर्म हमारा, परिचय हिंदी भाषा।
रंग-बिरंगे पर्व हमारे, एक रहें अभिलाषा।।
मान सरोवर गंगा-धारा, शीतलता अपनाओ।
हिंद धरा पर फूल खिलाओ, भारत राग सुनाओ।।

अलग-अलग है भाषा बोली, अलग-अलग पहनावा।
साथ रहें हैं साथ रहेंगे, करना नहीं दिखावा।।
नव निर्माण करेंगे दुनिया, शपथ यही लें आओ।
हिंद धरा पर फूल खिलाओ, भारत राग सुनाओ।।

✍ **रिंकु दुबे 'वैष्णवी'**
वाशरी प्रभाग,
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

समसामयिक चर्चा

मोबाइल की लत

अमित कुमार चटर्जी

मोबाइल फोन हमारी जिंदगी का अहम हिस्सा बन चुका है। इसके बिना आज का मनुष्य एक पल भी नहीं रह सकता। मोबाइल फोन बिना, आजकल सब कुछ सूना लगता है क्योंकि सब कुछ इसी में है। मनोरंजन के साधन और ऑनलाइन होने वाले समस्त कार्य फोन से ही हो जाते हैं। मोबाइल फोन बिना आज कम्युनिकेशन कर पाना मुश्किल है।

मोबाइल आज की जरूरत है और इसने मनुष्य के कई कार्यो को आसान बना दिया है, चाहे मोबाइल बैंकिंग के जरिए पैसे भेजना हो या तुरंत किसी से बातचीत करना। यह सब संभव मोबाइल की वजह से ही हुआ है। लेकिन इसका आवश्यकता से अधिक उपयोग करना नुकसानदायक हो सकता है।

लेकिन अब दिनचर्या में बढ़ते मोबाइल के उपयोग से लोग उसकी लत से प्रभावित हो रहे हैं। पहले, मोबाइल केवल संपर्क करने के लिए था, परंतु अब इसने हमारे हर काम को सुविधाजनक बना दिया है। इसलिए अब मनुष्य हर एक काम के लिए इस पर पूरी तरह निर्भर हो गया है। किसी भी चीज की अति नुकसानदायक होती है और मोबाइल की लत भी इसी श्रेणी में आता है।

मोबाइल एडिक्ट इंसान चाहकर भी मोबाइल को खुद से दूर नहीं रख पाता। उसे सुबह से लेकर रात तक अपने पास ही रखता है। सुबह उठकर मैसेज चेक करना, स्टेट्स अपडेट करना और कुछ रील्स स्क्रॉल करना, बस इन्हीं सब चीजों से उनकी दिन की शुरुआत होती है।

आज हर एक व्यक्ति मोबाइल का इस्तेमाल कॉल करके बातचीत करने और उसमें इंटरनेट चलाने के लिए करता है। यह बहुत लाभदायक उपकरण है। लेकिन अब लोग इसकी लत में पड़ने लगे हैं। लोग बातचीत करने के अलावा कई कार्यो को मोबाइल से करने लगे हैं चाहे वो बातें करना हो, मैसेज भेजना हो, गाने सुनना हो, वीडियो देखना हो, फोटो खींचना हो, पैसे भेजना हो, खबरें पढ़ना, सुनना या देखना हो, मनोरंजन वाले कार्यक्रम देखना हो, टीवी शो देखना हो और इंटरनेट पर किसी विषय के बारे में जानकारी हासिल करना हो, तो इन सबके लिए आज का मनुष्य अपने मोबाइल फोन पर ही निर्भर है।

बच्चे जब रोते हैं या किसी चीज के लिए जिद करते हैं तो अक्सर मां-बाप पीछा छुड़ाने के लिए बच्चों को मोबाइल या कोई और इलेक्ट्रॉनिक गैजेट थमा देते हैं। यह ट्रेंड आजकल काफी आम हो गया है। इससे बच्चा शांत तो हो जाता है लेकिन इससे उसे कई घंटे स्क्रीन के सामने बिताने की लत लग जाती है।

अब इसका सॉल्यूशन क्या है? मोबाइल एडिक्शन (mobile addiction) में पड़कर बच्चे, बड़े खासकर नौजवान अपना कीमती वक्त बर्बाद कर रहे हैं।

जो लोग मोबाइल की लत से छुटकारा पाना चाहते हैं उन्हें पहले तो अपनी आदतों में सुधार लाना होगा। सोशल मीडिया का इस्तेमाल करना कम करें। अगर आपने किसी भी सोशल ऐप को इंस्टॉल किया है तो आपका ज्यादातर टाइम उसी में बीतता होगा। इन ऐप्स को उसी तरह से डिजाइन किया गया है कि यह आपके ध्यान को अपनी ओर खींच सके। इस लत से छुटकारा पाने का तरीका यह है कि आप ऐसे ऐप्स, जो आपका समय बर्बाद करते हैं, उन्हें अपने स्मार्टफोन से अनइंस्टॉल कर दें।

आजकल मोबाइल का उपयोग करना बहुत आवश्यक हो गया है, इसलिए हम स्मार्टफोन का उपयोग पूरी तरह तो बंद नहीं कर सकते, पर इसके लिए समय निर्धारित कर सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर ही उसका उपयोग करना चाहिए।

मोबाइल की लत से छुटकारा पाने के लिए आपकी इच्छा शक्ति मजबूत होनी चाहिए। प्रारंभ में जब आप नई आदत डेवलप करने का प्रयास करते हैं तो शुरुआत में आपको दिक्कतें आ सकती है, किंतु

बाद में उसकी आदत पड़ जाएगी। इसलिए आप मोबाइल के बिना रहने का प्रयास करें।

बच्चों को बचाना है तो मोबाइल से बनाएं दूरी

जब हम मोबाइल के फायदे की बात करते हैं तो इसके कुछ नुकसान भी देखने को मिल रहे हैं। जिस तरह से इसने हमारे जीवन को सरल बनाया है, इंसान इसका गुलाम बनता जा रहा है। यदि वह मोबाइल से थोड़ी भी देर अलग रहे तो उसको बेचैनी होने लगती है। यह लत मोबाइल की स्क्रीन को बार-बार टच करने से लेकर उसकी किसी भी ऐप जैसे फेसबुक, व्हाट्सएप, यूट्यूब किसी की भी हो सकती है। इसमें व्यक्ति खुद को औरों से दूर कर लेता है और मोबाइल की दुनिया में ही खुद को समेट लेता है। मोबाइल के जितने लाभ हैं, उतने ही इसके दुष्परिणाम भी है। अगर समय रहते इन पर नियंत्रण नहीं किया गया तो ये घातक सिद्ध होंगे।

मोबाइल फोन की लत लगने पर क्या नुकसान होता है

सिर दर्द, याददाश्त कमजोर होना, आंखें कमजोर होना, दुर्घटना, डिप्रेशन का शिकार होना, बच्चों के लिए हानिकारक, बहरापन, समय का दुरुपयोग, एकाग्रता की कमी।

मोबाइल फोन के दुष्परिणाम से बचने के उपाय

दिन भर के कार्यों की सूची बनाएं। मोबाइल से अनावश्यक एप्लीकेशन हटाए। अपने परिवारवालों के साथ बातचीत करें। घर आने पर मोबाइल फोन का इस्तेमाल न करें। बच्चों के साथ खेलें सुबह शाम घूमने जाएं। मोबाइल फोन इस्तेमाल करने का टाइम निश्चित करें। शरीर से दूर रखें। लैंडलाइन का अधिक उपयोग करें। उपयोग में न होने पर स्विच ऑफ करें। स्पीकर पर बात करें।

फोन एडिक्शन होने पर नजर आते हैं ये संकेत

- बिना सोचे-समझे अपने फोन पर ऐप्स चेक करना या इंटरनेट ब्राउज करना।
- जब आप अपना फ़ोन एक्सेस नहीं कर पाते तो चिंतित या बेचैन महसूस करना।
- आपके फोन चलाने की वजह से ऑफिस या घर का काम अधूरा रह जाना।
- खतरनाक परिस्थितियों जैसे- ड्राइविंग करते वक्त या रोड क्रॉस करते वक्त फोन चलाना।
- फोन पर किसी भी तरह का मैसेज या नोटिफिकेशन आने पर तुरंत देखने की आदत।
- बिना वजह के काम में व्यस्त होने के बावजूद बार-बार अपना फोन चेक करना।

मोबाइल का यदि सही तरीके से उपयोग किया जाए तो यह एक वरदान के समान है। इसलिए आवश्यकता के हिसाब से ही इसका उपयोग करें।

कंपनी सचिव
बोर्ड सचिवालय
बीसीसीएल (मुख्यालय)

काव्यकुंज

हमसे टकराओगे

हमसे टकराओगे तो ख्वाब बदल जाएंगे,
जो भी फौलाद हो, वो खाक में ढल जाएंगे।

हमसे मिलने की तमन्ना भी संभल कर करना,
हम जो जलने पे आएंगे तो जल जाएंगे।

सिर्फ इशारों पे चलेगा ये ज़माना कब तक,
एक दिन खेल में मोहरें भी बदल जाएंगे।

शहर वालों ने मेरी हद को गलत समझा है,
मैं जो निकला तो कई रस्ते निकल जाएंगे।

तुमने कागज़ के जो रिश्ते बनाए थे मुझसे,
वक्त की बारिश में वो सब के सब गल जाएंगे।

अबके हर शख्स मेरी बात से हैरान हुआ,
मेरा लहजा ही मेरे हक़ में ग़ज़ल गाएंगे।

हमने काँटों से भी सीखा है वफ़ा का मतलब,
फूल बनकर तो कई चेहरे बदल जाएंगे।

इससे पहले कि कोई और मसीहा आए,
हम ही उठ खड़े होंगे और महल जाएंगे।

✍ पंकज कुमार दुबे
लिपिक, पूर्वी झरिया क्षेत्र
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

समसामयिक चर्चा

डिजिटल अरेस्ट

✍ मनीष कुमार

वर्तमान में आये दिन हम ये खबर सुनते हैं कि एक व्यक्ति ने किसी को मोबाइल से सोशल मीडिया स्काइप/व्हाट्स एप्प के माध्यम से वीडियो कॉल कर अरेस्ट कर पैसे निकाल लिया, आखिर ये चर्चा में क्यों है? समझ नहीं पाते कि ऐसा कैसे संभव है, क्या है ये? जिससे लोग इतने भयभीत हो जाते है कि अपनी जमा पूँजी कुछ ही मिनटों में गँवा देते हैं। डिजिटल अरेस्ट के जरिये करोड़ों रुपये का चूना लगा रहे हैं। डिजिटल अरेस्ट की बढ़ती घटनाओं पर आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी भी चिंता जता चुके हैं। इससे बचने के लिए क्या कोई उपाय कर सकते हैं? अगर हाँ ! तो आइये आसान भाषा में जानते है की डिजिटल अरेस्ट क्या होता है ?

डिजिटल अरेस्ट क्या है :- यह एक प्रकार की साइबर धोखाधड़ी का एक नया तरीका है, जिसमें जालसाज़ व्यक्ति सरकारी अधिकारी जैसे सीबीआई / ईडी / कानून प्रवर्तन अधिकारी बनकर ऑडियो या वीडियो कॉल पर लोगों को धमकाते हैं और गिरफ्तारी के झूठे बहाने से उन्हें डिजिटल रूप से बंधक बना लेते हैं।

धमकाने की रणनीति किस प्रकार होती है :- लोगों को कॉल करने के उपरान्त उन्हें अवैध गतिविधियों में शामिल होने का आरोप लगाते हैं, जैसे कि ड्रग्स या नकली पासपोर्ट जैसी प्रतिबंधित वस्तुओं को भेजा गया हो या प्राप्त किया हो, इसके बाद उन्हें इस मामले को बंद करने के लिए पैसे की मांग की जाती है या फिर आपके किसी प्रियजन को आपराधिक गतिविधियों तथा दुर्घटना में फंसाया गया हो, ऐसी बातें बोलकर उन्हें डराया जाता है।

डिजिटल अरेस्ट का खेल करके झांसे में कैसे लेते हैं

- अनजान नंबर से व्हाट्सएप / स्काइप जैसे एप्प के माध्यम से वीडियो कॉल आती है।
- गैर कानूनी काम में फंसने या परिजन के किसी मामले में पकड़े जाने का जानकारी दी जाती है।
- धमकी देकर वीडियो कॉल पर लगातार बने रहने के लिए मजबूर किया जाता है।
- स्कैमर्स मनी लॉन्ड्रिंग, ड्रग्स का धंधा या अन्य अवैध गतिविधियों का आरोप लगाते हैं।
- पीड़ित को परिवार या फिर किसी को भी इस बारे में कुछ न बताने की धमकी दी जाती है।
- वीडियो कॉल करने वाले व्यक्ति का बैकग्राउंड पुलिस स्टेशन जैसा नजर आता है।
- पीड़ित को लगता है कि पुलिस उससे ऑनलाइन पूछताछ कर रही है या मदद कर रही है।
- केस को बंद करने और गिरफ्तारी से बचने के लिए मोटी रकम की मांग की जाती है।
- मनोवैज्ञानिक हेरफेर: धोखेबाज पीड़ितों के भावनात्मक स्थिति को बढ़ाते रहते हैं और बैकग्राउंड में तकनीकों का प्रयोग कर जैसे नकली रोने की आवाज या परिवार के सदस्यों को अपने गिरफ्त में होने की एक्टिंग करते हुए उन्हें और अधिक भावनात्मक रूप से कमजोर बनाते हैं।

डिजिटल अरेस्ट से बचने के लिए हम क्या कदम उठा सकते हैं:-

शांत व सतर्क रहें

सबसे पहले इस प्रकार के कॉल आते ही आपको शांत रहकर आने वाले मोबाइल कॉल के नंबर पर ध्यान दें, संभव हो तो उसकी रिकॉर्डिंग कर लें, शुरुआत में शक होने पर तुरंत फोन काट दें, फोन पर लंबी बातचीत करने से बचें।

जानकार बनें

इस बात का ध्यान रखें कि डिजिटल अरेस्ट जैसी कोई चीज़ नहीं होती है तथा कोई भी सरकारी एजेंसी आपको ऑनलाइन धमकी नहीं देगी और न ही आपको वीडियो कॉल कर आपको प्रताड़ित करेगी।

निजी जानकारी देने से बचें

कॉल या वीडियो कॉल पर ठगों के सवालों और तर्कों का जवाब देने में जल्दबाजी न करें। शांत रहें, सिर्फ सुनें। अनजान नंबरों से आए सामान्य और वीडियो कॉल पर भी कोई निजी जानकारी न दें।

धोखाधड़ी की रिपोर्ट करें

किसी भी संदिग्ध साइबर गतिविधि की जानकारी तुरंत साइबर क्राइम हेल्पलाइन नं पर 1930 या cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करें।

ऑनलाइन OTP/पासवर्ड शेयर न करे

अगर कोई आपको वीडियो कॉल या फिर कॉल कर आपको ओ॰टी॰पी॰ या फिर पासवर्ड देने को बोलता है तो, यह देने से बचें और न ही कोई कागज़ात का सत्यापन ऑनलाइन करवाने की कोशिश करें।

अधिकृत पोर्टल से जाँचें

जब भी आपको किसी प्रकार का कोई केस – मुकदमे / फर्जी एफ आई आर से संबंधित कॉल या आधिकारिक दस्तावेज़ दिखाए तो, घबराएं नहीं, यह जाँचें कि यह अधिकृत सरकारी पोर्टल से है या नहीं।

भारतीय साइबर अपराध समन्वय केन्द्र (I4C) के अनुसार भारत में साइबर क्राइम में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है, यह चिंताजनक प्रवृत्ति भारत के डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र में लगातार बढ़ते खतरे का संकेत दे रही है। वर्ष 2021 से सितंबर, 2024 के बीच साइबर स्कैम से कुल मौद्रिक नुकसान ₹27,914 करोड़ तक पहुँच गया है, जो कि एक चिंता का विषय है। साथ ही इससे बचने के लिए हमें अंतरराष्ट्रीय सहयोग, खुफिया जानकारी साझा करने तथा राष्ट्रों के बीच इन प्रतिक्रियाओं के बीच समन्वय स्थापित कर साइबर अपराध को रोकने में सफल हो सकते है। अगर हम इन सब बातों का ख्याल रखें तो हम डिजिटल अरेस्ट से बच सकते हैं और अपने मेहनत से कमाए पैसों को भी सुरक्षित रख सकते हैं।

अनुवादक (प्र॰)
राजभाषा विभाग
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

काव्यकुंज

मैं लड़की का पिता हूँ

मैं लड़की का पिता हूँ।
इसलिए दीन हीन हूँ ।
आत्महीनता सहता हूँ।
फटे कुर्ते और पैबंद धोती पहनता हूँ ।
कारण मैं लड़की का पिता हूँ ।

खून का घूंट पीकर रहना अपना
सामाजिक कर्त्तव्य समझता हूँ ।
सयानी है बेटी, ब्याहनी है बेटी,
सुशील है, नेक है,
बेटी मेरी लाखों में एक है।
पर एक ऐब है वह लड़का नहीं ।
लड़की है, और मैं लड़की का पिता हूँ ।

समाजाधिपति के डसने के डर से पड़ा हूँ।
कारण मैं लड़की का पिता हूँ।
अब लिए खड़ा सवाल हूँ,
क्या लड़की अभिशाप है?
नहीं भाई लड़की तो वरदान है।
कारण मैं लड़की का पिता हूँ।
दीन होकर भी दान करने का अधिकारी हूँ ।
कारण मैं लड़की का पिता हूँ।

✍ सुलक्षणा कुमारी
सिस्टर इंचार्ज
केन्द्रीय चिकित्सालय, धनबाद

रोचक जानकारी

प्यारे पेट्स: रेड इअर स्लाइडर

✍ प्रणव ओझा

जीवन की व्यस्तता में कुछ पल खुशियों के बिताने के लिए एक पालतू जानवर हमारा सच्चा साथी हो सकता है। घरों में प्रायः लोग कुत्ता, बिल्ली, तोता, खरगोश और मछलियाँ आदि पालते हैं, बहुत से लोगों की पसन्द एक्ज़ोटिक पेट्स भी होते हैं, पर इन सभी की देखभाल में अधिक समय एवं जिम्मेदारी की आवश्यकता पड़ती है। क्या कभी आपने सोचा है कि घरों में कछुआ पालना भी एक उत्तम विकल्प हो सकता है, क्योंकि कछुवा एक लो मेंटिनेंस पेट है। कछुवा एक मूक पशु होने के नाते कभी बिल्ली, तोता, कुत्ता के जैसे अपनी आवाज से सुबह आपको उठा तो नहीं सकता पर कछुवे की यही खासियत तो आपको देर तक सोने की स्वतंत्रता भी देती है और यह प्यारा भी होता है।

अब प्रश्न उठता है कि कौन सा कछुवा पालने के लिए सबसे उपयुक्त होगा। इस संदर्भ में हमें समझना होगा कि कछुवे मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं। थलीय कछुवे (Tortoise) इन्हें कूर्म भी कहते हैं, समुद्री कछुवे और नदियों तथा सरोवरों के मीठे पानी के कछुवे (turtles and terrapins)। कूर्म पूर्णतः जमीन पर रहने वाले शाकाहारी कछुवे होते हैं, ये शान्त स्वभाव के होते हैं किन्तु इन्हें पालने में सबसे बड़ी चुनौती यह है कि ठण्ड के मौसम में इन्हें शीतनिद्रा (hibernation) में जाने से रोकने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। समुद्री कछुवों को घर में पालना सम्भव नहीं है। घर में पालने के लिए नदियों तथा सरोवरों के मीठे पानी के कछुवे (fresh water turtles) सबसे सुलभ होते हैं, इन्हें हम एक्वेरियम में आटोमेटिक वाटर हीटर के द्वारा आसानी से शीतनिद्रा (hibernation) में जाने से रोकने के साथ यूवी लाइट बल्ब लगाकर बास्किंग (सूर्य ताप) भी प्रदान कर सकते हैं। इनमें से अधिकतर भारतीय कछुवे जैसे भारतीय तटस्थ कठोर खोल वाला कछुआ (Indian Roofed Turtle) – Pangshura tecta, भारतीय चमड़ीदार कछुआ (Indian Softshell Turtle), गंगा का बड़ा सिर वाला कछुआ (Indian Flapshell Turtle) – Lissemys punctate, लाल मुकुट वाला कछुआ (Crowned River Turtle) – Hardella thurjii, भारतीय पतली गर्दन वाला कछुआ (Narrow-headed Softshell Turtle) – Chitra indica आदि को पालना वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के तहत प्रतिबंधित है। ऐसी परिस्थिति में पेट शॉप में उपलब्ध रेड ईअर स्लाइडर (Red Ear Slider) प्रजाति का कछुआ एक आदर्श पालतू पशु है। कानों के दोनों तरफ लाल रंग इसे और भी आकर्षक बनाता है। पृष्ठ भाग पर कठोर हरा-भूरा कवच इसकी सुन्तरता बढ़ाता है। लगभग ₹2000 में अमेरिकी जाति के इस कछुवे रेड ईअर स्लाइडर का एक जोड़ा आसानी से मिल जाता है।

अन्य पालतू जानवरों की तुलना में कछुए की देखभाल सरल होती है। यह कम जगह घेरता है और अधिक देखभाल की आवश्यकता नहीं होती। यह शांत स्वभाव का होता है और घर के एक्वेरियम में आसानी से रह सकता है। उचित देखभाल मिलने पर यह कछुआ 20 से 30 वर्षों तक जीवित रह सकता है। इसे मुख्यतः बाजार में उपलब्ध विभिन्न कछुआ आहार के साथ-साथ हरी पत्तियाँ और फल-फूल खिलाए जा सकते हैं। कछुवे के संतुलित आहार के अन्तर्गत प्रोटीन और सब्जियाँ दोनों शामिल रहें तो कछुवा निरोगी रहता है। बड़े एक्वेरियम में यूवी बल्ब, वाटर हीटर, फिल्टर पंप, तथा सन बास्किंग प्लेटफॉर्म की व्यवस्था कछुवा पालने में आवश्यक होती है। कछुओं के साथ साल्मोनेला बैक्टीरिया रहता है इसलिए इनके साथ खेलने के पश्चात् साबुन से हाथ धो लेना चाहिए।

हमें यह ध्यान देना होगा कि यदि हम इसे पालें तो जीवन भर इसका साथ निभाएं। हमनें देखा है कि रेड ईअर स्लाइडर के सुन्दर से बच्चे को हम पालने के लिए शौक से घर ले आने के पश्चात् इसके वयस्क होने पर इसे हम तालाबों आदि प्राकृतिक जल संसाधनों में मुक्त नहीं कर सकते क्योंकि यह एक भारतीय जाति का कछुवा नहीं है और यह भारतीय प्राकृतिक परिवेश में उन्हीं संसाधनों का उपयोग करता है, जो भारतीय प्राकृतिक कछुवे करते हैं, जिससे भारतीय जाति के कछुवों का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है। अतः इसे पालें तो इस साथी का जीवन भर साथ निभाने के लिए तैय़ार रहें।

रेड ईअर स्लाइडर एक आकर्षक और देखभाल में आसान पालतू कछुआ है। उचित देखभाल और सही वातावरण प्रदान कर आप इसे स्वस्थ और खुश रख सकते हैं। यदि आप एक कम देखभाल वाले और दीर्घायु पालतू पशु की तलाश में हैं, तो यह कछुआ निश्चित तौर पर आपकी आशाओं पर खरा उतरेगा।

प्रबंधक (कार्मिक)
जनसंपर्क विभाग,
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

स्वास्थ्य-चर्चा

यकृत प्रत्यारोपण
(लीवर ट्रांसप्लांटेशन)

✍ डॉ. दीपक प्रकाश

पेट के दायीं ओर स्थित लगभग डेढ किलोग्राम (1.36 किलोग्राम) का लीवर शरीर के कई महत्वपूर्ण कार्यों को नियंत्रित, संपादित तथा संचालित ही नहीं करता, हानिकारक पदार्थों को भी शरीर से बाहर निकाल फेंकता है। शरीर का कोई भी कार्य इसके बिना संपादित नहीं हो सकता। लीवर की खासियत यह है कि इसमें वृद्धि करने की असीम क्षमता होती है। सत्तर फीसदी हिस्सा शरीर से अलग कर देने के बावजूद मात्र दो से तीन सप्ताह के अंदर तेजी के साथ वृद्धि कर सामान्य आकार का हो जाता है। इतना ही नहीं, मात्र तीस फीसदी हिस्से में ही महत्वपूर्ण पदार्थों की इतनी मात्रा संग्रहीत होती है कि शरीर को आवश्यक पदार्थ की आपूर्ति करने में पूरी तरह सक्षम होता है। इन्हीं खासियत की वजह से ट्रांसप्लांटेशन के दौरान डोनर के लीवर का मात्र आधा हिस्सा ही निकाला जाता है जो प्रत्यारोपण के दो से तीन सप्ताह के अंदर वृद्धि कर सामान्य आकार का हो जाता है। डोनर के आधे हिस्सा को भी सामान्य आकार धारण करने में इतना ही वक्त लगता है। इस दौरान न मरीज और न ही डोनर को किसी तरह की परेशानी या जटिलता होती है और मरीज तथा डोनर सामान्य जीवन जीने लगते हैं। यह खासियत शरीर के दूसरे अंगों में नहीं होती।

इन्हीं खासियत की वजह से ट्रांसप्लांटेशन के दौरान लीवर का मात्र आधा हिस्सा ही लिया जाता है। यही दो से तीन सप्ताह के अंदर वृद्धि कर सामान्य आकार का हो जाता है। डोनर के आधे हिस्से को भी सामान्य आकार धारण करने में इतना ही वक्त लगता है। इस दौरान न तो मरीज और न ही डोनर में किसी तरह की परेशानी या जटिलता देखने को मिलती है। मात्र थोड़े दिनों के बाद ही मरीज तथा डोनर सामान्य जीवन जीने लगते हैं।

लीवर ट्रांसप्लांटेशन एक आधुनिक सर्जरी है। इसमें रोगग्रस्त लीवर की जगह स्वस्थ लीवर प्रतिस्थापित किया जाता है। यह सर्जरी लीवर के कैंसर, ट्यूमर, सिरोसिस जन्मजात तथा पुरानी बीमारी, जिसमें लीवर काम करना बंद कर दें, के इलाज के लिए किया जाता है। हालांकि लीवर प्रत्यारोपण 60 से भी अधिक लीवर की बीमारियों के इलाज के लिए किया जा सकता है। लेकिन, हर बीमारी का इलाज प्रत्यारोपण ही है, यह जरूरी नहीं है। वे नये या पुराने रोग जिसमें लीवर अपना काम स्थायी रूप से करना बंद कर देता है, के इलाज के लिए प्रत्यारोपण किया जाता है। शर्त केवल यह होती है कि मरीज को इसके साथ दूसरा कोई रोग न हो जो प्रत्यारोपित लीवर को नुकसान पहुंचाये। लीवर को छोड़कर दूसरे अंगों का कैंसर, नशीली दवाओं, शराब का अत्यधिक सेवन तथा संक्रामक रोगों की स्थिति में प्रत्यारोपण के लिए सर्जन मना करते हैं। एचआइवी के संक्रमण के मरीजों को पहले मना किया जाता था, लेकिन अब इसकी सलाह दी जाने लगी है। अत्यधिक उम्र, हृदय, फेफड़ा या दूसरे रोगों के गंभीर मरीजों को इसके लिए मना किया जाता है।

लीवर ट्रांसप्लांटेशन : कुछ तथ्य

- सिरोसिस के एडवांस स्टेज में ही ट्रांसप्लांटेशन सफल होता है।
- ब्रेन डेड पर्सन तथा नजदीकी रिस्तेदार जिसका रक्त समूह समान हो उसी का ट्रांसप्लांटेशन किया जा सकता है।
- सही समय पर, सही मरीज का, सही सर्जन द्वारा ग्राफ्ट करने पर सफलता की दर 80 फीसदी होती है।
- ट्रांसप्लांटेशन के बाद कड़ी निगरानी जरूरी है।
- ट्रांसप्लांटेशन के बाद सामान्य जीवन व्यतीत किया जा सकता है।

लीवर शरीर के दाहिने ओर रहनेवाला ऐसा अंग है जो शरीर की मेटाबोलिक एक्टिविटी को नियंत्रित एवं संचालित करता है। यह रक्त में रासायनिक पदार्थों को नियंत्रित ही नहीं करता बल्कि हानिकारक पदार्थों को निकालने का भी काम करता है। यह ग्लूकोज, प्रोटीन तथा वसा के मेटाबोलिज्म में हिस्सा लेता है तथा अधिक पदार्थों को भी स्टोर करता है, जरूरत पड़ने पर उसकी आपूर्ति भी

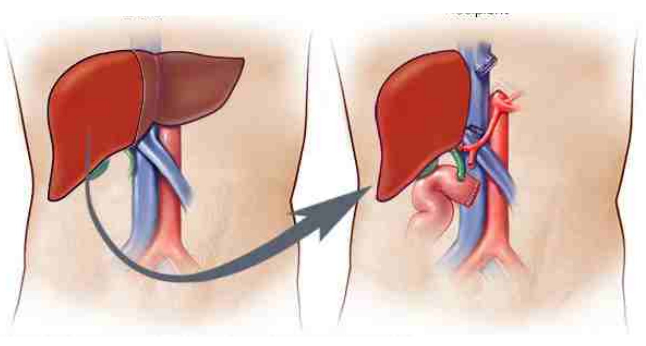

करता है। शरीर के महत्वपूर्ण कार्य को संपादित करने में भी अहम् भूमिका निभाता है। मेटाबोलिज्म के बाद अतिरिक्त हानिकारक पदार्थों को शरीर के बाहर भी निकालता है।

किसे कराने की जरूरत ?

वैसे एक्यूट या क्रानिक रोग में जब लीवर काम करना बंद कर दे और ठीक होने की संभावना नहीं हो, सिरोसिस ऑफ लीवर या लीवर कैंसर के मरीज ट्रांसप्लांटेशन के लिए उपयुक्त माने जाते हैं। यदि किसी मरीज को क्रानिक हिपेटाइटिस के साथ हिपेटाइटिस-बी, हिपेटाइटिस-सी या हिपेटाइटिस-डी का संक्रमण हो या ऑटो इम्यून डिजीज, मेटाबोलिक डिजीज, बिलियरी एट्रेसिय के मरीजों को लीवर प्रत्यारोपण के लिए उपयुक्त माना जाता है।

इंटरनेशनल गाइड लाईन के अनुसार वैसे वयस्क जिनकी सिरोसिस की वजह से लीवर की कोशिकाएं क्षतिग्रस्त होकर नष्ट हो गयी हों और दुबारा ठीक होने की संभावना न हो और जिनकी जीवित रहने की संभावना एक साल से कम हो, लीवर ट्रांसप्लांटेशन के लिए उपयुक्त माना जाता है। लीवर फेल्योर के मरीजों का भी ट्रांसप्लांटेशन किया जा सकता है। ट्रांसप्लांटेशन के पहले लीवर सर्जन जांच कर बताते हैं कि मरीज का इलाज दवा से संभव है या ट्रांसप्लांट करने की जरूरत है। लीवर फेल्योर की स्थिति में मरीजों में कई तरह के लक्षण देखने को मिलते हैं। कमजोरी तथा हर समय थकान का अनुभव, भूख न लगना-तेजी से भूख में गिरावट, पाचन तंत्र संबंधित परेशानियां, तेजी से वजन का गिरना, त्वचा, नाक, मुंह से रक्त स्राव, पेट में पानी का भरना, मानसिक कार्यक्षमता में गिरावट आदि इनके मुख्य लक्षण हैं।

बच्चों में लीवर ट्रांसप्लांटेशन सामान्यतः विलियरी एट्रेसिया की वजह से करने की जरूरत पड़ती है। इसमें पित्त को वहन करने वाली नली या तो जन्मजात होती ही नहीं या फिर बीमारी की वजह से नष्ट हो जाती है। ऐसी स्थिति में पित्त का परिवहन पूरी तरह रुक जाता है। जो आगे चलकर सिरोसिस का कारण बनता है।

ट्रांसप्लांट के पहले

यदि एक बार एण्ड स्टेज लीवर डिजीज की डायग्नोसिस हो जाती है तो लीवर स्पेश्यलिस्ट इस बात के लिए आकलन करते हैं कि मरीज लीवर ट्रांसप्लांट के लिए उपयुक्त है या नहीं। मरीज को पांच से सात दिनों तक भर्ती रखकर जांच में कुछ खास निर्णय लेने होते हैं। रोग की निश्चित डायग्नोसिस के बाद, बीमारी की गंभीरता पर विचार किया जाता है कि ट्रांसप्लांट कितना जरूरी है और मरीज लीवर ट्रांसप्लांट के लिए फिट है? इसके लिए हार्ट, फेफड़ा, किडनी के साथ दूसरे अंगों के साथ-साथ और भी कई जरूरी जांच की जाती है। किसी भी तरह के इंन्फेक्शन को रूल आउट किया जाता है। उसके बाद लीवर स्पेश्यलिस्ट मरीज के हेल्थ कंडिशन को देखते हुए निर्णय लेते हैं कि ट्रांसप्लांट कितना सफल होगा?

इतना सब देख तथा जांच परख लेने के बाद अंतिम चरण में मरीज को ऑपरेशन के लिए मानसिक तथा मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार किया जाता है। मरीज के साथ परिवार के दूसरे सदस्यों की भी काउंसिलिंग की जाती है। इस दौरान ट्रांसप्लांट के प्रोसिजर, हॉस्पिटल स्टे, ऑपरेशन के बाद की स्थिति, फॉलो-अप तथा परिवार द्वारा कैसे मरीज की देखभाल करनी है, आदि की विस्तृत चर्चा की जाती है।

अंत में बारी आती है ट्रांसप्लांट की। यदि मरीज मृत डोनर का लीवर ट्रांसप्लांट कराना चाहता है तो मरीज को वेटिंग में रखा जाता है या परिवार के नजदीकी रिश्तेदार डोनेशन के लिए तैयार होते हैं तो ब्लड ग्रुप आदि मैच कराया जाता है। डोनर की पूरी जांच कराने के बाद ट्रांसप्लांट की तैयारी की जाती है।

यदि मरीज मृत डोनर का इंतजार कर रहा होता है तो जब तक डोनर उपलब्ध नहीं हो जाता, ट्रांसप्लांट टीम की निगरानी में ही रहना होता है। इस दौरान स्थिति बिगड़ने पर लीविंग लीवर डोनेशन पर विचार करने के लिए कहा जाता है।

प्रत्यारोपण प्रक्रिया

लीवर की स्थिति के अनुसार लीवर प्रत्यारोपण मूलतः तीन तरह से किया जाता है-

1. अर्थोटॉपिक लीवर ट्रांसप्लांटेशन-

जिस मरीज के लीवर पूरी तरह से खराब हो चुके होते हैं उसे पूरी तरह से निकाल कर वहाँ स्वस्थ लीवर प्रतिस्थापित किया जाता है, उसे अर्थोटोपिक लीवर ट्रांसप्लांटेशन कहते हैं।

2. हेटरोटॉपिक लीवर ट्रांसप्लांटेशन-

यदि किसी मरीज का लीवर रोगग्रस्त हो, किंतु भविष्य में ठीक होने की संभावना हो तो रोगग्रस्त लीवर के साथ-साथ स्वस्थ लीवर को दूसरे स्थान पर प्रतिस्थापित किया जाता है। भविष्य में पुराना लीवर जब पूरी तरह स्वस्थ हो जाता है तो प्रतिस्थापित लीवर को निकाल दिया जाता है। इस क्रिया को संपादित करने के लिए मरीज को दो-दो आपरेशन की पीड़ा से गुजरना पड़ता है। इसे हेटरोटॉपिक लीवर ट्रांसप्लांटेशन कहा जाता है।

3. रिडयूस्ड साइज लीवर ट्रांसप्लांटेशन-

तीसरे तरह का प्रत्यारोपण में डोनर लीवर को पूरी तरह प्रतिस्थापित नहीं किया जाता, कुछ हिस्सा ही उपयोग में लाया जाता है। यह सर्जरी खासकर बच्चों में की जाती है। डोनर लीवर के एक ही हिस्से को प्रतिस्थापित करने के कारण बाकी बचे हिस्से को दूसरे मरीज में भी प्रतिस्थापित किया जाता है। इस तरह एक लीवर से दो मरीजों का लाभ हो जाता है।

सामान्यतः प्रत्यारोपण के लिए पहली विधि अर्थात आर्थोट्रापिक विधि ही अपनायी जाती है, जिसमें रोगग्रस्त लीवर को पूरी तरह से निकालकर स्वस्थ लीवर प्रतिस्थापित किया जाता है। रोगग्रस्त लीवर के इलाज की यह विधि पूरी दुनिया में स्वीकृत है। जानलेवा बीमारियों तथा एक्यूट लीवर फेल्योर की स्थिति में मरीज की जान बचाने के लिए यह विधि अपनायी जाती है। यह ऑपरेशन आज मार्डन ट्रीटमेंट के क्षेत्र में काफी महंगा माना जाता है। इसमें सामान्यतः तीन अनुभवी सर्जन, एक एनेस्थेटिक तथा चार नर्सों के साथ दस से 18 घंटे का समय लगता है। कारण यह है कि अत्यधिक छोटी-छोटी रक्त नलिकाओं को आपस में जोड़ा जाता है। इस ऑपरेशन में दूसरे ऑपरेशन की तुलना में अत्यधिक ज्यादा खतरे होते हैं।

लीवर ट्रांसप्लांट करने के लिए मरीज के पहले कृत्रिम लीवर सपोर्ट सिस्टम लीवर डायलिसिस में रखा जाता है। सभी ट्रांसप्लांट आर्थोट्रापिक तरीके से किया जाता है और मरीज के रोगग्रस्त लीवर को पूरी तरह निकालकर डोनर लीवर को ठीक उसी स्थान पर प्रत्यारोपित कर दिया जाता है। पेट के ऊपरी भाग में बड़ा-सा चीरा लगाया जाता है। उधर डोनर लीवर में पाये जाने वाले रक्त को पूरी तरह एक विशेष विधि से निकाल दिया जाता है। उसके बाद लीवर को प्रत्यारोपित किया जाता है।

वयस्क मरीजों में मृत डोनर के लीवर को पूरी तरह से प्रत्यारोपित किया जाता है। लेकिन, अधिकतर बच्चों में रिड्यूस्ड साइज लीवर ट्रांसप्लांटेशन विधि अपनायी जाती है। रिड्यूस्ड साइज लीवर ट्रांसप्लांटेशन में डोनर लीवर का कुछ हिस्सा ही प्रत्यारोपित किया जाता है। यह विधि अत्यंत छोटे बच्चों में अपनायी जाती है। इस तरह एक लीवर का प्रयोग कम से कम दो मरीजों में प्रत्यारोपित किया जा सकता है। लेकिन जीवित डोनर के साथ यह विधि नहीं अपनायी जाती, हेल्दी लीवर के थोड़े हिस्से को ही प्रत्यारोपण के लिए निकाला जाता है और उसी को प्रत्यारोपित किया जाता है। बच्चों में वयस्क डोनर लीवर का मात्र 20 फीसदी हिस्सा ही काफी होता है। लीवर में वृद्धि होने की काफी क्षमता के कारण मरीज तेजी से रिकवर करता है। मात्र एक सप्ताह भर्ती के बाद मरीज की छुट्टी कर दी जाती है।

डोनर के रिस्क की बात करें तो 0.1 फीसदी में जटिलताएं होने की संभावना होती है। लेकिन ऐसा बहुत कम ही होता है कि इसके लिए पेट खोलने की नौबत आ जाये। सामान्यतः विलियरी फिस्चुला, गैस्ट्रिक स्टैशिश या संक्रमण की घटनाएं देखी गयी हैं। ऐसा आमतौर पर लीवर के दाहिने हिस्से को प्रत्यारोपण के लिए निकालने के बाद देखने को मिलता है।

सर्जरी में छह घंटे से लेकर चौदह घंटे का समय लग सकता है। आपरेशन थियेटर में यदि लीविंग डोनर है तो दो सर्जरी एक साथ चलती है। एक सर्जन मरीज का रोगग्रस्त लीवर निकालते हैं तो दूसरा सर्जन कैडेवटिक लीवर को तैयार करते हैं। पूरी तैयारी के बाद डोनर लीवर को रोगग्रस्त लीवर की जगह फिट कर दिया जाता है।

सर्जरी के बाद मरीज को एक से तीन सप्ताह तक अस्पताल में भर्ती रहने की जरूरत पड़ती है। संक्रमण तथा नये लीवर को शरीर स्वीकार लें, इसके लिए मेडिसिन दी जाती है। इस बीच मरीज को अपने स्वास्थ्य की ओर कैसे ध्यान देना है, कौन-कौन सी सावधानियां बरतनी हैं, इसके संबंध में जानकारी दी जाती है। मरीज को अस्पताल में ही खाने की शुरूआत करायी जाती है। सबसे पहले पानी पीने के लिए दिया जाता है। उसके बाद जैसे-जैसे नया लीवर काम करना शुरू करता है, ठोसाहार दिया जाता है।

अस्पताल से छुट्टी होने के पहले सर्जन विभिन्न तरह की जांच कराकर यह इत्मीनान हो जाना चाहते हैं कि नया लीवर अच्छी तरह काम कर रहा है। किसी तरह की गड़बड़ी, संक्रमण, रक्त का

थक्का जमने, रिजेक्शन के संकेत तो नहीं है। पूरी तरह से इत्मीनान के बाद ही सर्जन मरीज की छुट्टी करते हैं और इस बात की भी हिदायत दी जाती है कि किसी भी तरह की तकलीफ या परेशानी होने पर तुरंत सर्जन से संपर्क करे। घर में संयमित जीवन, नियमित एक्सरसाइज तथा हेल्दी डाइट लेने की हिदायत दी जाती है। शराब पीने के लिए भी मना किया जाता है। यदि लीवर खराब होने की वजह शराब होती है तो और भी मना किया जाता है।

प्रत्यारोपण के बाद

प्रत्यारोपण के बाद घर लौटने पर मरीज को शुरूआती दिनों में अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की जरूरत पड़ती है। लीवर के मरीजों में यह सुधार धीरे-धीरे होता है, समय भी काफी लगता है। जैसे-जैसे स्वास्थ्य में सुधार होता जाता है, शारीरिक साक्रियता बढती जाती है। शुरूआती दिनों में चलने-फिरने में दिक्कत होती है। कमजोरी के कारण खड़ा होने तक की ताकत नहीं रहती। खानपान में सुधार के बाद जैसे-जैसे ताकत बढती है, पहले घर के किसी सदस्य का सहारा लेकर थोड़ा बहुत चलना चाहिए। इस दौरान खांसने तथा गहरी सांस लेते वक्त विशेष सावधानी बरतने की जरूरत होती है।

अपने काम में तीन से छह माह के बाद लौटा जा सकता है तब, जब लगने लगे कि वह पूरी तरह ठीक हो गया है। काम में लौटने के पहले अपने सर्जन से जरूर संपर्क कर लेना चाहिए। इतना ही नहीं, एक्सरसाइज के संबंध में भी सर्जन से बात कर लेना जरूरी है।

जटिलताएं

अधिकतर सेंटरों में सामान्यतः जीवित डोनर सर्जरी की जाती है। हालांकि यह सर्जरी पूरी तरह से सुरक्षित मानी जाती है। फिर भी सभी डोनर के लिए यह जानना जरूरी है कि 0.5 से एक फीसदी मौत की संभावना होती है। दूसरी जटिलताओं में रक्त स्राव, संक्रमण, चीरा के स्थान पर दर्द, रक्त का थक्का जमने से लेकर पूरी तरह से ठीक होने में देरी हो सकती है। ऐसे प्रत्यारोपण के बाद मरीज को पूरी तरह ठीक होने में दो से तीन माह का समय लग जाता है।

डोनर या मरीज की जांच ठीक से नहीं होने की स्थिति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण जटिलता तथा शंका रिजेक्शन की होती है। अर्थात मरीज डोनर लीवर को स्वीकार नहीं कर पाता है। ऐसी स्थिति आपरेशन के बाद से लेकर एक साल के अंदर आ सकती है। इसका पता मरीज के रक्त की जांच तथा उसको होने वाली परेशानियों द्वारा लगाया जाता है। रिजेक्शन की स्थिति में मरीज को बुखार, भूख न लगना, मांसपेशियों में दर्द जैसी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इससे बचने के लिए ट्रांसप्लांट सर्जन मरीज को कई तरह की दवाइयों का सेवन करने की हिदायत देते हैं। कई ऐसी दवाइयां हैं, जिनका सेवन पूरी जिंदगी करने की जरूरत होती है अन्यथा कई तरह की परेशानियां होने की संभावना होती है।

सावधानियां

आपरेशन के बाद अस्पताल से छुट्टी मिलने के पहले मरीज अपने सर्जन से यह जान लें कि नया प्रत्यारोपित लीवर अच्छी तरह कार्य कर रहा है या नहीं। घर आने के बाद नियमित रूप से रक्त की जांच कराते रहे। इससे नये लीवर के संबंध में इसका पता चलता रहेगा कि कोई जटिलता तो नहीं आ रही है। संक्रमण तथा दूसरी समस्याओं पर भी पैनी निगाह रखने की जरूरत है। घर या बाहर संक्रामक रोगों से पीड़ित मरीजों के साथ उठना-बैठना न करें। इससे संक्रमण की संभावना रहती है। हेल्दी डाइट, नियमित एक्सरसाइज करने की भी जरूरत है। सर्जन, जो भी हिदायत देते हैं, उसका पालन कड़ाई से करना चाहिए.

अधिकतर लोग बीमारी के पहले जैसा खानपान था, वैसा अपना सकते हैं। लेकिन, आपरेशन के बाद खायी जाने वाली दवाइयों से कई बार वजन बढ़ने या डायबिटीज होने या फिर कोलेस्टेराल के बढ़ने की संभावना होती है। इससे बचने के लिए मील प्लानिंग तथा संतुलित आहार, जिसमें वसा की मात्रा कम होती है, लेने की जरूरत होती है। अधिकतर लोग प्रत्यारोपण के बाद सामान्य शारीरिक सक्रियता बनाये रखते हैं। इतना ही नहीं, दांपत्य जीवन भी व्यतीत कर सकते हैं। महिलाओं के लिए यह हिदायत दी जाती है कि कम से कम एक साल तक गर्भवती न हो।

आज यूएसए के हजार से भी अधिक सेंटरों सहित यूरोपीय तथा अन्य देशों में लीवर प्रत्यारोपण धड़ल्ले से हो रहा है। अब तो 80 से 85 फीसदी मरीज ऑपरेशन के बाद कई सालों तक सामान्य जीवन व्यतीत करते हैं। चूंकि मृत शरीर के लीवर को प्राप्त करने से लेकर प्रत्यारोपित करने तक में काफी कानूनी अड़चनें आती हैं, अतः मरीज तथा उसके परिवार के सदस्य इसके लिए विशेष उत्साह नहीं दिखाते। यही कारण है कि जीवित इंसान के लीवर को प्रत्यारोपित करने के समाचार ही अधिक मिलते हैं।

पूर्व चिकित्सा अधीक्षक
केंद्रीय चिकित्सालय,
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

कहानी

स्मृतियों का सौदा

✍ रोशन कुमार सिंह

संध्या के समय रामबरन जी अपने मिट्टी के घर के सामने खुले में खाट बिछाकर मुँह से चिलम लगाए आसमान को ताके जा रहे थे, अंधेरा बचे-खुचे उजाले को अपने आगोश में लेने पर आतुर था। कुछ देर बाद आखिरी कश के साथ चिलम की आग भी बुझ गई। चिलम को खाट के निचे एक पावे से टेककर रख देते हैं, मुँह से कुछ बुदबुदाहट की आवाज आती है और गमछे का तकिया बनाकर खाट पर लेट जाते हैं। खाट पर लेटे हुए आसमान को एकटक देखे जा रहे हैं और भूत, वर्तमान, भविष्य के साथ जूझ रहे हैं मानो उनके मन में उथल-पुथल सा मचा हो।

स्मृतियों से जूझते हुए राम बरन जी बुदबुदा रहे थे कि, 'इस चिलम की आग की तरह मेरी चिता की आग भी एक दिन ठंढी हो जाएगी और फिर मैं भी आ जाऊँगा तुम्हारे पास फूलमती। जीवन सार्थक नहीं हो पाया फूलो। माँ गई तो तुम भी उसके पीछे-पीछे चली गई। इस खाली घर में अभागा जीवन जीने के लिए बच गया तो केवल मैं और तुम्हारी इकलौती निशानी कुलवंत। क्षमा करना फूलो मैंने तुमसे किया एक भी वचन पूरा नहीं किया। तुम चाहती थी कि कुलवंत को मैं खूब पढाऊँ-लिखाऊँ और एक अफसर बनाऊँ। मैंने अपनी ओर से बहुत प्रयास भी किया, शहर भेजा, हर महीने समय पर उसे पढाई के खर्चे भी भेजे, लेकिन लगता है उसकी किस्मत ही खराब है या फिर हम दोनों की। अभी घर पर ही है, सोने के कंगन बेचने की बात कर रहा है। देखो कब तक टाल पाता हूँ । कुछ दिन देखता हूँ उसके बाद उसका विवाह कर नई बहुरिया लेकर आऊँगा, कम से कम दोनों वक्त समय पर खाना तो मिलेगा। मैं भला क्या-क्या करूँ, अब शरीर में पहले जैसी शक्ति रही भी नहीं। मैं खेत में काम करूँ या घर पर खाना बनाऊँ।'

रामबरन जी तीनों काल में गोते लगा ही रहे थे कि कुलवंत आ पहुँचा और उच्च स्वर में बोला, 'अरे पिताजी आप यहाँ लेटे हैं मैंने अंदर से आपको कितनी बार आवाज लगाई, लेकिन आपको इस नक्कारे बेटे की आवाज अब सुनाई कहाँ देती है। खैर छोड़िये पिताजी, मुझे बताइए... आपने आखिरकार क्या फैसला लिया? पिताजी आप कंगन रखकर क्या करेंगे। सोने चांदी तो होते ही हैं मुसीबत की घड़ी में काम आने के लिए। आप तो जानते ही हैं मैंने अपनी तरफ से कितना प्रयास किया पर सफलता नहीं मिली तो मैं क्या करूं? अब सरकारी नौकरी मेरे वश के बाहर की बात है इसलिए मैं हमेशा के लिए घर आ गया हूँ और हां दोबारा मुझे पटना जाने के लिए नहीं बोलिएगा। ऐसा है कि कल सुबह में दोनों सोने के कंगन मुझे दे दीजिए, मैं कल बाजार जाकर किसी सोनार की दुकान में बेचकर उसकी अच्छी कीमत ले आऊंगा और फिर उसी से अपनी सड़क वाली जमीन पर एक कमरे में कोई व्यवसाय शुरू करूंगा। वैसे भी आपको खेती के अलावा तो कुछ करना नहीं है। दिनभर खेत में कुदाल चलाते रहते हैं, क्या उखाड़ लिया आपने। आज भी उतनी ही जमीन आपके पास है जितनी जमीन मेरे जन्म के समय थी और जमीन भी कितनी मात्र 10 कट्ठा। जितने में न आदमी जी सकता है ना सही से मर सकता है। एकाध कट्ठा बेच भी दिया तो खाने के लाले पड़ जाएंगे। तो उससे बढ़िया है कि मां के सोने के कंगन मुझे दे दीजिए ताकि कोई व्यवसाय शुरू कर सकूं, मैं भी अपने पैर पर खड़ा हो सकूं।'

इतना कह कर कुलवंत घर के भीतर सोने चला गया और रामबरन बाबू बेटे की बात को सुनकर मौनावस्था धारण कर चुके थे। मौन थे परंतु उनकी आंखों में नींद नहीं थी। वो तो उसे पल को याद कर रहे थे जब उनकी माँ ने उनकी पत्नी को विवाह के पश्चात मुँह दिखाई में दो सोने के कंगन दिए थे। बेचारी बहुत खुश थी, नया घर, नए लोग और इतनी अच्छी सास। जिसने आते ही दोनों हाथों में सोने का कंगन पहना दिया। मरते वक्त फूलमती ने कहा था, यह मेरी नहीं यह आपके माँ की निशानी है, इसे संभाल कर रखिएगा। मैं इसी कंगन के रूप में आपके साथ रहूंगी। तब से लेकर आज तक न जाने कितनी मुश्किलें आई, सुखाड़ आया, बाढ़ आई, कई-कई दिन भूखे भी सोना पड़ा। पर कभी भी मैंने कंगन को बेचा नहीं। मैं भूखे मर भी जाता तो भी नहीं बेचता। उसकी यही तो एक मात्र स्मृति बची थी मेरे पास। अब मेरा क्या, जो बेचना है बेच दो। ऐसे भी घर में रहा अब कौन मेरे सिवाय, आज न कल मैं भी फूलो के पास चला जाऊंगा। फिर डरता हूँ कि वहाँ जाकर क्या मुंह दिखाऊंगा? फूलमती को क्या कहूंगा कि तुम्हारे कंगन मैंने बेच दिए। वह भी इसलिए कि तुम्हारे बेटे को रोजगार करना था, क्योंकि मैं उसे काबिल न बना सका। अरे मैंने तो यह भी सोचा था कि जब कुलवंत की शादी होगी तो बहू को कंगन सौंप कर गंगा नहाने

चला जाऊँगा। पर भविष्य के गर्व में क्या है, किसे पता? मुझे माफ करना फूलो।

थोड़ी देर बाद भावनाओं पर आंसुओं की चादर डालकर रामबरन बाबू बाहर में ही खाट पर सो जाते हैं।

अगले दिन सुबह में हुआ वही जिसकी पटकथा शाम को लिख दी गई थी। रामबरन बाबू ने सोने के कंगन कुलवंत को सौंप दिए। उधर कुलवंत बाजार की ओर रवाना पिताजी की स्मृति का सौदा करने। रामबरन बाबू बिल्कुल सीधे, भावनाओं पर काबू रखने वाले, कोई बहस बाजी नहीं और एकदम से सामाजिक। उन्हें अपनी मान-प्रतिष्ठा की बहुत चिंता रहती। वे नहीं चाहते थे कि घर में इस बात को लेकर बाप बेटे में तू-तू मैं-मैं हो और लोगों को इसकी भनक लगे। उन्हें डर था कि यह सब जानने के बाद लोग तरह-तरह की बातें करेंगे और समाज में उनकी बदनामी होगी। बिल्कुल शांति-प्रिय व्यक्ति थे।

दोपहर का समय है, कुलवंत अभी बाजार से आया नहीं है। रामबरन बाबू भारी मन से कंधे पर कुदाल लिए खेतों की ओर रवाना हो गये जो मुख्य सड़क के उस पार था। रामबरन बाबू घर से निकलकर कुछ दूर आगे सड़क पार करने वाले ही थे कि हवा को चीरती हुई तेज रफ्तार में एक बस जाकर उनके पास रूकी। बस रुकते ही उस पर से एक जवान बीस-बाईस वर्ष का लड़का उतरता है। रंग गोरा, चेहरे पर मुस्कान, दुबला-पतला लम्बा कद, पीठ पर एक बैग लिए और हाथों में एक मिठाई का डब्बा पकड़े रामबरन जी की तरफ बढ़कर पूछता है, 'चाचा जी आप इसी गांव के रहने वाले हैं। क्या आप कुलवंत के घर का पता मुझे बता सकते हैं? रामबरन अनजाने भाव से, 'हाँ बेटा पर तुम कौन हो? तुम्हारा क्या नाम है?' उत्तर में अभिषेक ने कहा, 'चाचा जी मैं अभिषेक हूँ, मैं कुलवंत का रूम पार्टनर था पटना में। मुझे कुछ देना है और कुछ बताना है कुलवंत को। रामबरन जी मुस्कुराते हुए कहते हैं, 'जो भी देना है और बताना है मुझे बता सकते हो बेटा। मैं ही कुलवंत का पिता हूँ। संयोग से कुलवंत के पिता से ही तुम्हारी बात हो रही है।' अभिषेक झेंपते हुए, 'अरे चाचा जी मुझे क्षमा कीजिएगा। मैंने आपको पहचाना नहीं। मेरा प्रणाम है आपको।' रामबरन जी अभिषेक को आशीर्वाद देते हुए, 'हां खुश रहो बाबु, कहो क्या बात है? क्योंकि कुलवंत कुछ काम से बाहर गया हुआ है। उसे घर पहुँचने तक शाम हो जाएगी। ऐसे तुम घर चलो... पहले कुछ खा पी लो। लगता है बहुत दूर से आये हो।' अभिषेक टालते हुए, 'हाँ दूर से तो आया हूँ चाचा, लेकिन मैंने अभी-अभी जहाँ से इस गांव के लिए बस पकड़ी थी। वहीं मैंने नाश्ता वगैरह कर लिया है बस ये कुलवंत को घड़ी लौटानी थी। मैं जब एक सरकारी नौकरी के लिए परीक्षा देने जा रहा था, तब मैंने इसे कुलवंत से मांगा था। दुर्भाग्यवश मैं इसे कुलवंत को लौटाना भूल गया और फिर वह शहर छोड़ कर हमेशा के लिए गांव चला आया। तो इस घड़ी की खातिर मुझे गांव आना पड़ा। कुलवंत कहता था कि यह उसके पापा का दिया हुआ गिफ्ट है, उनकी निशानी है। वह इस घड़ी से बहुत प्यार करता था। वो इसे बड़े प्यार से संभाल कर रखता था। बोलता था मैं मरते दम तक इस घड़ी को अपने पास रखूंगा। अब देखिए न चाचा जी, यह घड़ी मेरे लिए भी कितनी भाग्यशाली निकली। मैंने भी प्रतियोगी परीक्षा पास कर ली। अरे देखिए मैं भी कितना भुलक्कड़ हूँ। यह लीजिए.... मैं शहर से मिठाई लाया हूँ आप सभी के लिए। अच्छा हुआ कि आप से मुलाकात हो गई। आप अब कुलवंत की घड़ी और मिठाई का डब्बा रखिए और वो देखिए दूसरी तरफ से एक बस आ रही है। मैं निकलता हूँ, मेरी तरफ से कुलवंत को हेलो कहिएगा।

बस आकर रूकती है, अभिषेक रामबरन जी के पैर छूकर बस में सवार हो निकल जाता है। इधर रामबरन जी कंधे पर कुदाल रखकर एक हाथ में घड़ी और दूजे में मिठाई का डब्बा पकड़े कभी अभिषेक तो कभी कुलवंत के बारे में सोच रहे थे। सोच रहे थे कि वास्तव में इन स्मृतियों को सहेजा जा सकता है? क्या कोई महत्व है इन स्मृतियों का या फिर एक समय के बाद यह घड़ी भी बिक जाएगी? क्या किसी का दिया हुआ उपहार किसी के लिए भाग्य के दरवाजे खोल सकता है? मन में इसी प्रकार के अनेक प्रश्न लिए रामबरन जी घर को लौट जाते हैं।

लिपिक, प्रशासन विभाग
सिजुआ क्षेत्र,
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

कहानी

अपनी भाषा, अपनी पहचान

महेंद्र कुमार सिंह

"मॉम, आई डोंट वांट टू गो टू नानी'ज़ हाउस!" पंद्रह साल का अमन चिल्लाया।

"बेटा, सिर्फ एक महीने की तो बात है," माँ ने समझाते हुए कहा।

अमन को यकीन नहीं हो रहा था कि उसे गर्मियों की छुट्टियाँ अपनी नानी के गाँव में बितानी होंगी। वह तो अपने दोस्तों के साथ मुंबई में समर कैंप में जाना चाहता था। लेकिन माँ-पापा ने फैसला कर लिया था।

अगले दिन, अमन ट्रेन में बैठा था, मुँह फुलाए हुए। उसके हाथ में लेटेस्ट गेमिंग कंसोल था। नानी के गाँव में इंटरनेट की स्पीड इतनी कम थी कि गेमिंग भी मुश्किल थी।

"वाह! कितना सुंदर गाँव है!" ड्राइवर ने कहा जब वे स्टेशन से नानी के घर की ओर जा रहे थे।

"व्हाटएवर," अमन ने बिना देखे ही जवाब दिया, अपने फोन में व्यस्त।

नानी के घर पहुँचते ही उनकी गोद में एक किताब दिखी। "क्या पढ़ रही हो, नानी?"

"प्रेमचंद की कहानियाँ," नानी मुस्कुराईं।

"हिंदी? बोरिंग!" अमन ने मुँह बनाया।

उसी शाम, अचानक बिजली चली गई। अमन का फोन डेड था, कंसोल की बैटरी खत्म। वह बोर होकर बरामदे में बैठा था।

तभी नानी ने लालटेन जलाई और कहानी सुनाना शुरू किया - एक चोर की कहानी, जो एक बूढ़ी औरत के घर चोरी करने आया था, लेकिन उसकी कहानी सुनकर ईमानदार बन गया।

अमन मंत्रमुग्ध होकर सुनता रहा। "और फिर क्या हुआ, नानी?"

अगले दिन से अमन रोज शाम को नानी से कहानी सुनने लगा। धीरे-धीरे वह खुद भी हिंदी की किताबें पढ़ने लगा। उसे पता चला कि हर भाषा में कहानियाँ कहने का अपना जादू होता है।

एक दिन गाँव में कवि सम्मेलन था। अमन ने देखा कि कैसे कवि अपनी कविताओं से लोगों को हँसा और रुला रहे थे। उसने सोचा - क्या अंग्रेजी में इतना जादू हो सकता है?

महीना खत्म होने को आया। अब अमन जाना नहीं चाहता था। "नानी, एक और कहानी!"

"बेटा, तुम खुद पढ़ो। मैंने तुम्हारे लिए कुछ किताबें रखी हैं।"

मुंबई लौटकर अमन ने देखा कि उसकी सोच बदल गई थी। स्कूल में उसने हिंदी साहित्य क्लब ज्वाइन किया। दोस्तों को हैरानी हुई जब उसने स्कूल की प्रार्थना सभा में हिंदी कविता सुनाई।

"यार, तू तो हिंदी का शायर बन गया!" उसके दोस्त ने मजाक किया।

"हाँ भाई, क्योंकि अब समझ आया कि अंग्रेजी से दुनिया जीती जाती है, पर मातृभाषा से दिल जीते जाते हैं।"

आज दस साल बाद, अमन एक सफल टेक स्टार्टअप चलाता है। उसकी कंपनी का नाम है 'कहानी' - एक ऐसा ऐप जो बच्चों को उनकी मातृभाषा में कहानियाँ सुनाता है।

"नानी, आपकी कहानियों ने मेरी जिंदगी की कहानी बदल दी," वह अक्सर फोन पर कहता है।

नानी मुस्कुराती हैं। उन्हें पता था कि भाषा सिर्फ शब्दों का खेल नहीं है - यह तो हमारी संस्कृति की नदी है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी बहती रहती है। और इस नदी में डुबकी लगाने वाला कभी प्यासा नहीं रहता।

वरिष्ठ निजी सहायक (राजभाषा) राजभाषा विभाग,
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड धनबाद

राजभाषा समाचार

10वें वार्षिक राजभाषा

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के सहयोग से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), धनबाद द्वारा दिनांक 28 जनवरी, 2025 को कोयला नगर स्थित सामुदायिक भवन सभागार में आयोजित दसवें राष्ट्रीय राजभाषा सम्मेलन का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री समीरन दत्ता, अध्यक्ष, नराकास धनबाद की अध्यक्षता में दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। इस अवसर पर डीएवी स्कूल के बच्चों द्वारा स्वागत गान प्रस्तुत किया गया।

उद्घाटन सत्र में श्री मुरली कृष्ण रमैय्या, निदेशक (कार्मिक); श्री राकेश कुमार सहाय, निदेशक (वित्त), बीसीसीएल; श्री आनंद सक्सेना, उप महानिरीक्षक, सीआईएसएफ; एवं मुख्य अतिथि श्रीमती आस्था जैन, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), कोयला मंत्रालय विशेष रूप से उपस्थित रहे।

उद्घाटन सत्र में बोलते हुए नराकास अध्यक्ष एवं बीसीसीएल सीएमडी श्री समीरन दत्ता ने कहा कि हिंदी की पहचान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ रही है। धनबाद स्थित केंद्र सरकार के सभी कार्यालय नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के माध्यम से एकजुट होकर राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं, यह एक सराहनीय कार्य है। राजभाषा हिंदी भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। यह जन-जन की भाषा होने के साथ-साथ प्रशासनिक कार्यों का भी सशक्त माध्यम है। हिंदी हमारे देश में संपर्क भाषा के रूप में विभिन्न भाषा-भाषी लोगों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। साथ ही, यह हमारी सरकारी नीतियों और योजनाओं को आम जनता तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आगे उन्होने कहा कि आज के इस अवसर पर मैं सभी सदस्य कार्यालयों से आग्रह करता हूँ कि वे राजभाषा के प्रयोग को और अधिक बढ़ावा दें। हमें याद रखना होगा कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग है। इसके माध्यम से हम आम जनता से सीधा संवाद स्थापित कर सकते हैं।

उद्घाटन सत्र में सेल द्वारा प्रकाशित पत्रिका "कोयला इस्पात भारती" पत्रिका का विमोचन किया गया। इस अवसर पर एक भव्य राजभाषा प्रदर्शनी एवं पुस्तक मेला का भी आयोजन किया गया। पुस्तक मेला का उद्घाटन नराकास अध्यक्ष श्री समीरन दत्ता एवं अन्य गणमान्य अतिथियों द्वारा किया गया।

इसके बाद चार तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र में श्रीमती आस्था जैन ने "राजभाषा हिंदी की 75 वर्षों की गौरव

सम्मेलन का आयोजन

यात्रा" विषय पर अपना मुख्य व्याख्यान दिया। उन्होंने हिंदी के विकास और वर्तमान स्थिति पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने कविताओं के माध्यम से सभी को हिंदी में ही समस्त कार्य करने का संदेश दिया। इस अवसर पर विशिष्ट वक्ता के तौर पर पधारे डॉ. विचित्रसेन गुप्ता, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोलकाता ने भी इस विषय पर अपने विचार साझा करते हुए कहा कि 75 वर्षों में राजभाषा के रूप में हिंदी ने अभी वह मंजिल नहीं हासिल की है, जो संविधान निर्माताओं की संकल्पना थी। हमें तिमाही हिंदी प्रगति रिपोर्ट भरने में पूर्ण ईमानदारी दिखानी चाहिए। हमें अपनी सोच में हिंदी को सर्वोपरि स्थान देना चाहिए।

द्वितीय सत्र में श्री बालेंदु शर्मा दाधीच, निदेशक (मार्केटिंग प्रमुख , सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, सिंगापुर एशिया), माइक्रोसॉफ्ट ने "हिंदी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता" विषय पर एक रोचक और ज्ञानवर्धक प्रस्तुति दी। उन्होंने बताया कि कैसे आधुनिक तकनीक हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में सहायक हो सकती है। उन्होंने हिंदी के लिए उपलब्ध विभिन्न टूल्स का डेमो देते हुए इसमें सहजता से कार्य करने के बारे में बताया।

अपराह्न के तृतीय सत्र में श्री अजय मलिक, पूर्व उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण और राजभाषा नीति पर महत्वपूर्ण मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा कि माननीय राष्ट्रपति और संसद द्वारा जारी आदेशों की अवहेलना का अधिकार किसी को भी नहीं है। यदि हम हिंदी में कार्य नहीं कर रहे हैं तो यह अवहेलना ही है।

अंतिम सत्र में प्रो. हिमांशु शेखर चौधरी, कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद ने "हिंदी के विकास में क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान" विषय पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि हिंदी के विकास में क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण है। सभी भारतीय भाषाओं के विकास में ही हिंदी का विकास छिपा है।

कार्यक्रम के दौरान 9 कंपनियों द्वारा राजभाषा प्रदर्शनी में अपने-अपने स्टॉल लगाए गए और हिंदी पुस्तक मेले में 5 प्रकाशनों द्वारा अपने स्टॉल लगाकर हिंदी पुस्तकों की बिक्री की गयी। मेले में लगभग 1000 से अधिक पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें तकनीकी, साहित्यिक और शैक्षणिक पुस्तकें शामिल थीं। इस दौरान सेल, बीसीसीएल, यूनियन बैंक और केनरा बैंक के स्टॉल को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय और प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए।

नराकास धनबाद के लगभग 50 सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों के अलावा कोल इंडिया एवं इसकी अनुषंगी कंपनियों के प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी की। कार्यक्रम में स्वागत संबोधन बीसीसीएल के महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री कुमार मनोज ने किया और समापन नराकास धनबाद के सदस्य सचिव श्री दिलीप कुमार सिंह के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

उत्सव

दीक्षा महिला मंडल, बीसीसीएल द्वारा

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (बीसीसीएल) के नेहरू कॉम्प्लेक्स में दीक्षा महिला मंडल द्वारा दिनांक 24-25 दिसंबर 2024 के दौरान दो दिवसीय "आनंद मेला" का आयोजन किया गया। दीक्षा महिला मंडल के तत्वावधान में आयोजित इस मेले का उद्घाटन धनबाद के माननीय सांसद श्री ढुल्लू महतो ने पत्नी श्रीमती सावित्री देवी के साथ किया।

समारोह में कई विशिष्ट अतिथियों ने भाग लिया, जिनमें बाघमारा के विधायक श्री शत्रुघ्न महतो, बोकारो के एसपी श्री मुकेश कुमार (सपरिवार), झरिया विधायक श्रीमती रागिनी सिंह, टुंडी विधायक श्री मथुरा महतो शामिल थे। बीसीसीएल के शीर्ष अधिकारी अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री समीरन दत्ता, निदेशक (तकनीकी) श्री संजय कुमार सिंह, निदेशक (कार्मिक) श्री मुरली कृष्ण रमैय्या, तत्कालीन निदेशक तकनीकी (योजना एवं परियोजना) श्री शंकर नागचारी, निदेशक (वित्त) श्री राकेश कुमार सहाय तथा सीवीओ अमन राज भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

दीक्षा महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती मिली दत्ता के साथ-साथ उपाध्यक्ष श्रीमती पूर्बिता रमैय्या, श्रीमती नमिता सहाय, श्रीमती रंजना सिंह, श्रीमती प्रीति नागचारी, श्रीमती (डॉ.) नेहा दास तथा सचिव श्रीमती चेतना कुमार ने समारोह की मेजबानी की।

दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई और इस अवसर पर दीक्षा महिला मंडल की स्मारिका का विमोचन किया गया। सांसद श्री ढुल्लू महतो ने अपने संबोधन में बीसीसीएल के समाज कल्याण कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि दीक्षा महिला मंडल का प्रयास नारी सशक्तिकरण को बढ़ावा देकर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना है।

डीएवी तथा डीपीएस के बच्चों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति की गई। इसके पश्चात् उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए तीन विद्यार्थियों को धनबाद के सांसद श्री ढुल्लू महतो द्वारा सम्मानित किया गया:

1. सुश्री शालिनी कुमारी (95.4%)
2. श्री रवि रंजन पांडेय (95.4%)
3. सुश्री फिजा फातिमा (98%)

उत्कृष्ट पुलिस सेवा के लिए पुलिस बल के निम्नलिखित सदस्यों को एसएसपी धनबाद श्री एच पी जनार्दन द्वारा सम्मानित किया गया:

1. सुश्री अर्चना स्मृति खलको, उप पुलिस अधीक्षक (परीक्ष्यमान)
2. श्री राजीव कुमार सिंह, आरक्षी, मीडिया सेल, धनबाद

आनंद मेला में 14 महिला क्लबों ने दीक्षा महिला मंडल की हरियाली थीम, प्रगति और मुस्कान महिला समिति की ढाबा थीम, प्रेरणा महिला समिति की पंजाबी थीम, आशा किरण समिति की पतंग और मकर संक्रांति थीम, सीआईएसएफ की मिलेट्स थीम, अन्य महिला समितियों की

आनंद मेला का भव्य आयोजन

बीसीसीएल दीक्षा महिला मंडल द्वारा कोयला नगर स्थित नेहरू कॉम्प्लेक्स में आयोजित दो दिवसीय आनंद मेला में दूसरे दिन शहर भर के कई नामचीन लोगों ने शिरकत की। दो दिवसीय आनंद मेला में हस्तशिल्प, खान-पान, ज्वैलरी, पेंटिंग, ऑटोमोबाइल आदि से संबंधित 80 स्टॉल लगाये गये। आकर्षक थीम पर स्टॉल लगाए।

इनके अलावा, प्राइवेट उद्योगों के स्टॉल भी मेले का आकर्षण बने। इन स्टॉलों में हस्तनिर्मित उत्पाद, खाद्य सामग्री और सांस्कृतिक परिधान उपलब्ध रहे। आनंद मेला में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए , जो विभिन्न आयु वर्ग के लोगों के लिए मनोरंजन का केंद्र रहे।

विशिष्ट लोगों के आगमन पर दीक्षा महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती मिली दत्ता, उपाध्यक्ष श्रीमती पूर्बिता रमैय्या, श्रीमती नमिता सहाय, श्रीमती रंजना सिंह, श्रीमती प्रीति नागचारी, डॉ. नेहा दास ने सभी महिला समितियों की अध्यक्षों के साथ स्वागत किया। सभी गणमान्य अतिथियों ने मेले में लगे विभिन्न स्टॉलों का भ्रमण किया और खरीददारी भी की। इसके अलावा विभिन्न खेलों के माध्यम से भी लोगों के मनोरंजन की व्यवस्था की गयी। इन खेलों में गणमान्य हस्तियों ने भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित की।

पुरस्कार एवं सम्मान

आनंद मेला के दूसरे दिन पूर्व सांसद श्री पशुपति नाथ सिंह के हाथों से दीक्षा महिला मंडल की ओर से 06 दिव्यांगजनों को व्हील-चेयर उपलब्ध करायी गयी। इसके अलावा तीन महिला मीडिया कर्मियों तथा तीन महिला भारी वाहन चालकों (H E M M ऑपरेटर्स) को भी प्रशस्ति पत्र तथा नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सम्मानित होने वाली मीडिया कर्मी महिलाओं के नाम:

1. सुश्री सबिता गुप्ता, सहायक प्रबंधक(ब्रांडिग) , प्रभात खबर
2. सुश्री शिल्पा सिंह, उप संपादक-सह-एंकर, सिटी लाइव न्यूज
3. सुश्री दीक्षा सिंह, संवाददाता, बिहार ऑब्जर्वर

HEMM ऑपरेटर महिलाओं के नाम:

1. श्रीमती तारा देवी, सीएचपी चालक, बरोरा क्षेत्र
2. श्रीमती सोनवा कुमारी, सीएचपी चालक, बरोरा क्षेत्र
3. श्रीमती प्यासो देवी, सीएचपी चालक, कुसुंडा क्षेत्र

मेले में निकाले गये लकी ड्रॉ / लॉटरी के विजेताओं की घोषणा की गई। प्रथम पुरस्कार मोटर साइकिल, द्वितीय पुरस्कार रेफ्रिजरेटर, तृतीय पुरस्कार, चतुर्थ पुरस्कार 5G मोबाइल, पांचवा पुरस्कर माइक्रोवेव ओवन दिया गया। इसके अलावा प्रोत्साहन पुरस्कार में तीन विजेताओं को स्मार्ट वॉच, तीन को डिनर सेट और चार विजेताओं को मिक्सर ग्राइंडर प्राप्त हुए।

बीसीसीएल के सभी क्षेत्रीय महाप्रबंधक एवं कोयला भवन मुख्यालय के सभी विभागाध्यक्ष भी अपने-अपने परिवार के साथ मेला देखने पहुँचे। बीसीसीएल के कार्मिकों के अलावा आसपास के लोग भी सपरिवार मेले में आये।

संस्मरण

अधूरा सत्य

✍ राज किशोर साहू

अलमारी के कोने में रखे पुरानी एलबम पर आज निगाह पड़ गई, उसे बाहर निकाल कर यूँ ही पलटने लगा। जैसे कि बीते दिन आँखों के सामने से किसी चलचित्र की तरह गुजरने लगे। कुछ बचपन की तस्वीरें, एक तस्वीर में मैं माँ की गोद में आँखें अधमींची किये पड़ा था और बड़े ही जतन से माँ ने मुझे अपने आँचल में समेटा हुआ था। उन दिनों कितनी खूबसूरत थी माँ! एक चपल, चंचल, शोख, हसीन माँ ! माँ भी ऐसी हो सकती है क्या?

बकौल निदा फाजली

बाँट के अपना चेहरा माथा आँखें जाने कहाँ गई
फटे पुराने इक एल्बम में चंचल लड़की जैसी माँ

बाद के दिनों में माँ को तो बस सबके लिए जूझते ही देखा, सुबह से गये रात तक सबके लिए जुटी रहती। हम चार भाई-बहनों को समय पर तैयार कर स्कूल भेजना, पापा को दफ़्तर के लिए टिफिन, कपड़े, जूते और तमाम चीजें मुहैया कराती माँ। फिर झाड़-बुहारू, कपड़े एवं घर की साफ-सफाई में लग जाना। सुबह का नाश्ता दोपहर में करती और फिर थोड़ी देर के आराम के बाद हम बच्चों एवं पापा के लौटने के पहले उनके कलेवे के इंतजाम में लग जाती। गए रात बर्तन निपटाने के बाद बच्चों के पैरों में तेल लगाती माँ।

तब तक हम सभी बच्चे नींद की आगोश में जा चुके होते। मां कब सोती कब जगती, हमें पता भी नहीं चलता।

पापा के गुजर जाने के बाद आज माँ अकेली हो गई। हम सभी घर से दूर अपनी दुनिया में मशगूल हो गए। माँ अकेली पथराई निगाहों से पर्व-त्योहार के अवसर पर अपने बच्चों, नाती-पोतों का इंतजार करती रहती है। घर से उनकी यादें बावस्ता है। घर छोड़कर वो जाना भी नहीं चाहती, ये अधूरा सत्य है। क्योंकि अब माँ के लिए किसी के पास वक़्त नहीं है। कम से कम घर पर यादों का साथ तो है।

वरीय डाटा इंट्री ऑपरेटर
वित्त विभाग
पश्चिमी झरिया क्षेत्र
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

काव्यकुंज

कौन खनिक

कौन खनिक ?
गहरे कोयले की खानों में
काले सोने की खोज करे,
अदृश्य शक्ति को हासिल कर
जीवन को नई गति दे, वो खनिक ।

कौन खनिक ?
धरती के गर्भ में पड़े गहरे
अनमोल खजाना निकाले,
स्याह अँधेरी रातों में
उजाला भरे, वो खनिक ।

कौन खनिक ?
जीवन के संघर्ष में
हौंसले का दीपक जलाए,
धूल और मिट्टी के बीच
खुद को खोए, वो खनिक ।

कौन खनिक ?
भोर से संध्या तक
पसीने से सींचे धरती को,
अपनी मेहनत से बनाए
ऊर्जा का अंबार वो खनिक ।

कौन खनिक ?
जिसके बनाए विद्युत् से
चलता है संसार,
जिसके बिना चल न सकें
हम पग दो चार, वो खनिक ।

कौन खनिक ?
सर्दी की ठंडी रातों में
जो गर्मी लेकर आए,
अंधेरों में रोशनी बिखेरे
और संसार को संजीवनी दे,
वो खनिक ।

कौन खनिक ?
जिसकी मेहनत के बिना
रुक जाए सारा जहान,
जीवन की गति को गति दे
जिसकी गाथा है महान, वो खनिक ।

✍ चन्दन कुमार
उप प्रबंधक
झरिया मास्टर प्लान
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

काव्यकुंज

अपनी अपनी खुशियां

बड़ी बड़ी खुशियों के
ऊँचे-ऊँचे शानदार मॉल
जितनी बड़ी कीमत
उतनी बड़ी खुशी...
और मॉल से लगी
चौड़ी सड़क
चमचमाती गाड़ियां ..
चमकते लोग...
नए तेवर, इठलाते कदम
मॉल से भी ऊंचा
इनका दंभ...
मॉल कल्चर का स्तंभ!
सड़क से लगा पैदल पथ
और वहाँ लगे ठेले
टकटकी लगाए रेड़ीवाले

दो वक्त रोटी की जंग में
चिलचिलाती धूप हो
या हो कपकपाती ठंड
घनघोर बारिश में भी..
ताजी सब्जी, फल, फूल,चने
बेचनेवाले फटेहाल लोग..

कुछ निम्नतर ग्राहक
बेचारगी से लाचारगी का
सफर तय किए जो होते हैं
अपनी जेब भी
और उनकी नब्ज़ भी
बखूबी पहचानते हैं
वही इने गिने चंद लोग
मॉल को दूर से निहारते हैं
मगर सामान रेड़ियों से
खरीदते हैं !
ताजी सब्जी, ताजे मटर से
अपनी सेहत संभालते हैं।
सचमुच यही लोग, मगर
उनका भी पेट पालते हैं।
खुद जैसे तैसे जीते हैं,
उनको भी जिंदा रखते हैं
छोटी छोटी खुशियां खरीदते
हैं।

✍ राजकुमार साहा
महाप्रबंधक (खनन),
मानव संसाधन विकास विभाग
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड,
धनबाद

आजादी

एक शाम!
मिल गई मुझे,
कोने में खड़ी
श्वेत वस्त्रों में लिपटी,
बरबस निकल पड़ी आवाज...
कौन हो तुम?

दुबककर, और
सिमटती चली गई खुद में,
संशय बढ़ी,
तीव्र ध्वनि का सहयोग ले पुकारा
आखिर कौन हो तुम?

आवाज आई,
कभी जवानी, मैं भी हसीन थी
कितने ही मर मिटे थे
मेरे रूप यौवन के लिए
अमरत्व की बूंद से,
सींचा था मुझे
लेकिन अब!
मेरे अपने ही पूत
मुझे जानते तक नहीं
अवांछित श्राप लग चुका है मुझे
बचा सको तो बचा लो,
वरना-
खुद ही बिछड़ जाना होगा
मुझे तुमसे।

प्रेम और उद्वेग में
फिर न पूछ पाया
कौन हो तुम?

बढ़ा वहाँ
जहाँ खड़ी थी "वो"
देखा, पद चिन्हों में गुदा था
नाम उसका
"आजादी"

✍ सुब्रत कुमार पाण्डेय
वरीय ओवरमैन, ए. एम. पी. कोलियरी
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

काव्यकुंज

ख्वाहिश है कुछ करने की

ख्वाहिश है कुछ करने की, कुछ बनने की
आशियाना छोड़कर एक परिंदा निकला था।

पर उसे कहाँ पता था कि ख्वाहिश पूरी करने के पीछे,
आशियाना के साथ- साथ अपने भी छूट जाएंगे।

वह गिरता- उठता, लड़ता-झगड़ता
लेकिन अपने सपने आंखों में लेकर चलता
क्योंकि ख्वाहिश है कुछ करने की, कुछ बनने की।

गांव की हरियाली व हरे-भरे, खेत- खलिहान,
मक्के की रोटी सरसों का साग, मां की ममता,
पिता का आशीर्वाद और बड़े-बूढों का प्यार
सब कुछ छूट गया
क्योंकि ख्वाहिश है कुछ करने की, कुछ बनने की।

गांव- गांव घूमा, शहर-शहर भटका,
बहुत कुछ पाया और प्रतिष्ठा- सम्मान मिला
परंतु मन में शांति न थी
क्योंकि ख्वाहिश अभी भी कम न थी ।

✍ बुद्धि प्रकाश मीणा
उप प्रबंधक (खनन)
गोपालीचक कोलियरी,
पुटकी बलिहारी क्षेत्र
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

कोई पास कहाँ ठहर पाता है

बचपन अभाव में
जवानी दबाव में
बुढ़ापा प्रभाव में
गुज़रता है
दूसरों का पूरा
करते सपना
बीत गया जीवन
अपना
अपने सपनों की
आयी बारी,
दिखी चारों ओर
लाचारी,
बुढ़ापे में अकेलापन का
छाया बादल,
बात बात के तीखे बाणों से
रोज़ रोज़ दिल
हुआ घायल।
पहरेदारी करते हम जिसके
वह घर अब कब घर लगता है,
दोनों रहे जब-तक साथ
ग़र छोड़ चला कोई एक दूसरे को
अकेले घर में तब डर लगता है।
जीवन डोर टूटने की आस में
शेष बचे पलों पर हरदम,
मौत के डर से पसरा हरदम सन्नाटा
खूब गहरा लगता है।
ऐसे ही धूप-छांव में जीवन
गुज़र जाता है,
अंत समय
पड़ती जरूरत जब
कोई पास कहाँ ठहर पाता है।
कोई पास कहाँ ठहर पाता है।।

✍ श्याम नारायण सिंह
पूर्व वरीय अनुवादक (राजभाषा)
राजभाषा विभाग (मुख्यालय)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

काव्यकुंज

गणतंत्र

रावी के तट पर
लाहौर के अधिवेशन में
दिसंबर, 1929 को
लहरा तिरंगा प्रण लिया
पूर्ण स्वराज का संकल्प लिया

हर गांव-घर आजादी होगी
चरखा नभ को चूमेगा
26 जनवरी 1930 से
हम आजाद हैं, भारत बोलेगा

टूटेंगे गोलमेज सभी
नमक हिंदुस्तान भी तौलेगा
सत्य, विनय, अवज्ञा के पथ से
अंग्रेज भारत छोड़ेगा

उन्होंने भी खूब बल दिया
भेजा क्रिप्स मिशन को, बात किया
जब चर्चे सारे विफल हुए
तोड़ा देश को, निकल लिए

15 अगस्त की दोपहर
प्रिंसेस पार्क में ध्वजारोहण कर
आखिर हम आजाद हुए
परतंत्रता से स्वराज हुए

स्वराज को संपूर्ण करने को
सबको सत्ता पूर्ण करने को
संविधान सभा का गठन हुआ
जिसके अध्यक्ष पद पर
प्रसाद का चयन हुआ

अतुल्य अंबेडकर की भूमिका थी
ड्राफ्टिंग समिति की अध्यक्षता की
2 साल 11 महीने 18 दिन दिया
विश्व का सबसे लंबा
लिखित संविधान तैयार किया

दिन वो 26 नवंबर था
जब संविधान उपहार मिला
स्वतंत्र भारत मां के तन का
आभूषणों से श्रृंगार हुआ

फिर कभी जनवरी 26 को
जब था भारत आजाद हुआ
फहरा तिरंगा राष्ट्रपति ने
देश को गणतंत्र किया
धर्म-जाति का भेद मिटा
लोकतंत्र का मंत्र दिया

22 भाग, 12 अनुसूची
395 अनुच्छेद से सजे
इस ग्रंथ को
जरिया बनाया गया
निर्भरता से उठकर
होने प्रभुता संपन्न को

ये इस राष्ट्र की प्रस्तावना है
अनेकता में एकता और
अखंडता की भावना है
हो समता, स्वतंत्रता और
न्यायपूर्ण आचार सभी

हमें अधिकारों का ज्ञान रहे
हम कर्तव्यशील हों, ध्यान रहे
हो प्रचार समाजवाद का
हो व्यवहार निष्पक्षवाद का
हम संग, सतत, सुमार्ग चलें
आओ मिलकर एक यशस्वी
लोकतंत्रात्मक गणराज्य बने।

✍ पियूष रंजन
सहायक प्रबंधक (खनन)
पश्चिमी झरिया क्षेत्र, मुनीडीह
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

विशिष्ट गतिविधियाँ

फेफड़ों से संबंधित बीमारियों के इलाज के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए दिनांक 27 दिसंबर, 2024 को वल्लभभाई पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट (वीपीसीआई) के साथ कंपनी के निदेशक (कार्मिक) श्री मुरली कृष्ण रमैय्या ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए।

बीसीसीएल द्वारा नवनियुक्त कर्मियों के लिए 6 और 7 जनवरी 2025 को कोयला नगर के अन्नपूर्णा हॉल में दो दिवसीय परिचय, इण्डक्शन एवं ओरिएण्टेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति धनबाद द्वारा दिनांक 10 जनवरी, 2025 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

भारत सरकार के 100 दिवसीय टीबी उन्मूलन अभियान के तहत दिनांक 10 जनवरी 2025 को क्षेत्रीय चिकित्सालय भूली में एक स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सीएमएस बीसीसीएल डॉ. पुनम दुबे, डॉ. वी. के. पांडे, डॉ. झूलन मुखर्जी तथा धनबाद के माननीय विधायक श्री राज सिन्हा ने विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

6 जनवरी 2025 को बीसीसीएल द्वारा संचालित एमएसडीआई बेलगड़िया की फैशन प्रेन्योरल ट्रेनिंग की प्रशिक्षुओं के लिए कोयला नगर स्थित सामुदायिक भवन में एक भव्य फैशन शो का आयोजन किया गया।

दिनांक 21 जनवरी, 2025 को बीसीसीएल के क्षेत्रीय अस्पताल भूली द्वारा सरस्वती विद्या मंदिर स्कूल, भूली में "100 दिवसीय टीबी उन्मूलन अभियान" के अंतर्गत एक स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया।

विशिष्ट गतिविधियाँ

दिनांक 06 दिसंबर, 2024 को कोयला नगर, धनबाद स्थित बाबासाहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा पर बीसीसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक सहित वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बाबासाहेब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (BCCL) को कोकिंग कोल खनन उद्योग में अपनी विशिष्ट पहचान और सामाजिक सरोकारों में उत्कृष्ट योगदान के लिए ब्रांड हंकोस द्वारा दिनांक 29 नवंबर, 2024 को नई दिल्ली में आयोजित भारतीय CSR अवार्ड्स 2024 में 'सर्वश्रेष्ठ कौशल विकास पहल 2024 (PSU)' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (बीसीसीएल) में आयोजित 53वीं अखिल भारतीय खदान बचाव प्रतियोगिता - 2024 का दिनांक 16 दिसंबर, 2024 को भव्य शुभारंभ हुआ। इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम का उद्घाटन डीजीएमएस के निदेशक खान सुरक्षा और बीसीसीएल के निदेशक (तकनीकी)/ संचालन श्री संजय कुमार सिंह ने किया।

दिनांक 07 दिसंबर, 2024 को बीसीसीएल के सामुदायिक भवन, कोयला नगर, धनबाद में आज कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न रोकथाम और जागरूकता विषय पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विशिष्ट अतिथि दीक्षा महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती मिली दत्ता द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति (नराकास) धनबाद की छमाही समीक्षा बैठक दिनांक 29 नवंबर, 2024 को सामुदायिक भवन, कोयला नगर में आयोजित की गयी। बैठक की अध्यक्षता श्री मुरली कृष्ण रमैय्या, निदेशक (कार्मिक), बीसीसीएल द्वारा की गयी।

दिनांक 08 नवंबर, 2024 को दीक्षा महिला मण्डल की उपाध्यक्षा श्रीमती पूर्बिता रमैय्या, श्रीमती नमिता सहाय एवं डॉ (श्रीमती) नेहा दास, सचिव श्रीमती चेतना कुमार द्वारा छठ व्रतियों को फल वितरित किया गया।

विशिष्ट गतिविधियाँ

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में स्वामी विवेकानंद की 162वीं जयंती पर कोयला नगर स्थित उनकी मूर्ति पर अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक श्री समीरन दत्ता, निदेशक (कार्मिक) श्री मुरली कृष्ण रमैय्या, निदेशक (वित्त) श्री राकेश कुमार सहाय और धनबाद विधान सभा क्षेत्र के विधायक श्री राज सिन्हा और अन्य गणमान्य लोगों ने माल्यार्पण किया।

दिनांक 01 नवंबर, 2024 सीआईएल स्थापना दिवस के अवसर पर कंपनी में निदेशक (कार्मिक) श्री मुरली कृष्ण रमैय्या के नेतृत्व में प्रभात फेरी और शहीद स्मारक पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (बीसीसीएल) में 28 अक्टूबर से 3 नवंबर 2024 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। शुभारंभ के अवसर पर सतर्कता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री समीरन दत्ता, निदेशक (कार्मिक) श्री मुरलीकृष्ण रमैय्या, निदेशक (वित्त) श्री राकेश कुमार सहाय और बीसीसीएल के मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री अमन राज उपस्थित रहे।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड की कॉरपोरेट स्तरीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही समीक्षा बैठक दिनांक 25 अक्तूबर, 2024 को निदेशक (कार्मिक) श्री मुरली कृष्ण रमैय्या की अध्यक्षता में, कोयला भवन में आयोजित की गयी।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के राजभाषा विभाग के संयोजन में केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली के सहयोग से दिनांक 14.10.2024 से 18.10.2024 तक पाँच दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

बीसीसीएल के सभी क्षेत्रों और मुख्यालय में दिनांक 17 अक्तूबर, 2024 को 'एक पेड़ माँ के नाम' विशेष अभियान 4.0 के तहत बड़े पैमाने पर पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अभियान के अंतर्गत कुल 2550 पौधे लगाए गए।

विशिष्ट गतिविधियाँ

सीएमडी श्री समीरन दत्ता के निर्देश और निदेशक कार्मिक की विशेष पहल पर दिनांक 08 अक्तूबर, 2024 को एक साथ 50 लोगों के लिए अनुकंपा आधारित नियोजन शिविर 1.0 लगा कर उन्हें कंपनी में नियुक्ति दी गयी। वर्ष 2024-25 के लिए 600 आश्रितों को अनुकंपा आधारित नियोजन देने का लक्ष्य रखा गया है।

दिनांक 02 अक्तूबर, 2024 को गाँधी जयंती के अवसर पर आयोजित समारोह में अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री समीरन दत्ता के करकमलों से बीसीसीएल के कवियों द्वारा सृजित कविताओं के संकलन "कोयला गुनगुनाता है" नामक पुस्तक का विमोचन किया गया।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड की खेलों को प्रोत्साहन देने की अपनी विशेष नीति के तहत दिनांक 02 अक्तूबर, 2024 को टेनिस कोर्ट का उद्घाटन सीएमडी श्री समीरन दत्ता द्वारा निदेशक मंडल एवं मुख्य सतर्कता पदाधिकारी की उपस्थिति में किया गया। बीसीसीएल दीक्षा महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती मिली दत्ता, उपाध्यक्ष श्रीमती पूर्बिता रमैय्या, श्रीमती नमिता सहाय, श्रीमती (डॉ.) नेहा दास भी विशेष रूप से उपस्थित रहीं।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड मुख्यालय कोयला भवन में दिनांक 02 अक्तूबर, 2024 को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के जन्मदिवस पर अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक और निदेशक मंडल व मुख्य सतर्कता अधिकारी द्वारा श्रद्धा-सुमन अर्पित किए गए और सफाई कर्मियों को स्वच्छता किट भेंट की गयी।

दिनांक 01 अक्तूबर, 2024 को कोयला नगर सामुदायिक भवन में भारत कोकिंग कोल लिमिटेड बीसीसीएल के परियोजना विद्यालयों के सैकड़ों छात्र-छात्राओं के लिए "स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता" विषय पर आयोजित मोटीवेशनल सेमिनार में बीसीसीएल के निदेशक (कार्मिक) श्री मुरलीकृष्ण रमैय्या द्वारा विशेष व्याख्यान दिया गया।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (बीसीसीएल) सीआईएल अंतर-कंपनी क्रिकेट टूर्नामेंट 2024-25 में शानदार प्रदर्शन करते हुए मेजबान टीम डब्ल्युसीएल को फाइनल में हराकर चैंपियन बनी।

बीसीसीएल BCCL
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
Bharat Coking Coal Limited

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

(एक मिनीरत्न कम्पनी)
(कोल इण्डिया लिमिटेड की एक अनुषंगी कंपनी)

BCCL

Powering India
Building Communities
Sustaining the Future

A Legacy of Strength, Innovation, and Sustainability in Coking Coal Mining since 1972 .

कोकिंग कोयला

देश की तरक्की का ईंधन

आधुनिक प्रौद्योगकी से कोयला खनन

पर्यावरण संरक्षण

ईको-पार्कों का विकास

सी एस आर गतिविधियां

कोयला भवन, कोयला नगर, धनबाद
झारखंड - 826005

facebook.com/bcclofficial
tweter.com/bcclofficial
instagram.com/bccl.official

Verma Enterprises, Dhanbad, Mob 94313 14776